Dainik Jagran

The Hindi Operating System

The world's largest INVISIBLE Literature

The New York Times Bestseller list has shaped American reading for 93 years

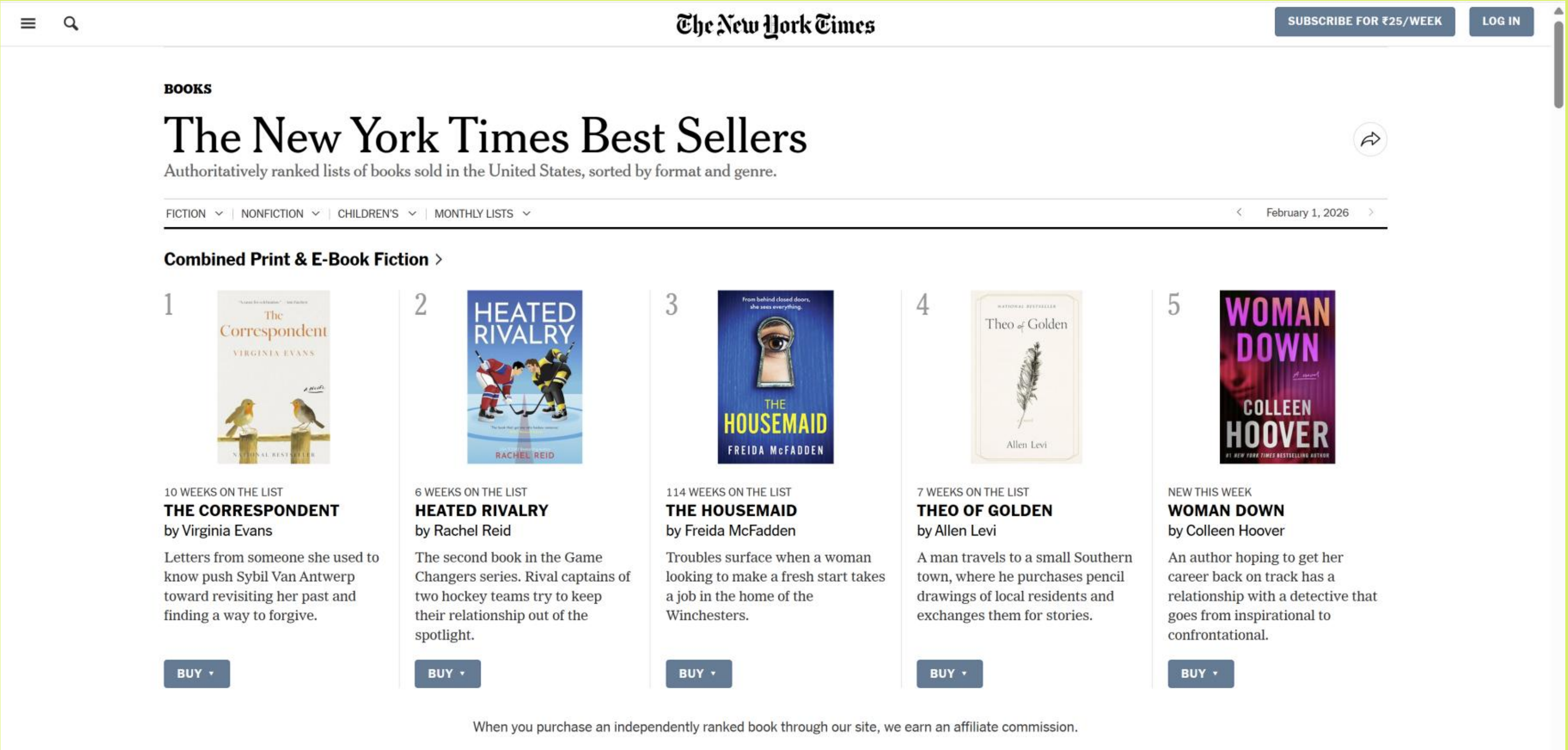

The New York Times

SUBSCRIBE FOR ₹25/WEEK

LOG IN

BOOKS

The New York Times Best Sellers

Authoritatively ranked lists of books sold in the United States, sorted by format and genre.

FICTION | NONFICTION | CHILDREN'S | MONTHLY LISTS

February 1, 2026

Combined Print & E-Book Fiction >

1

10 WEEKS ON THE LIST
THE CORRESPONDENT
by Virginia Evans

Letters from someone she used to know push Sybil Van Antwerp toward revisiting her past and finding a way to forgive.

BUY

2

6 WEEKS ON THE LIST
HEATED RIVALRY
by Rachel Reid

The second book in the Game Changers series. Rival captains of two hockey teams try to keep their relationship out of the spotlight.

BUY

3

114 WEEKS ON THE LIST
THE HOUSEMAID
by Freida McFadden

Troubles surface when a woman looking to make a fresh start takes a job in the home of the Winchesters.

BUY

4

7 WEEKS ON THE LIST
THEO OF GOLDEN
by Allen Levi

A man travels to a small Southern town, where he purchases pencil drawings of local residents and exchanges them for stories.

BUY

5

NEW THIS WEEK
WOMAN DOWN
by Colleen Hoover

An author hoping to get her career back on track has a relationship with a detective that goes from inspirational to confrontational.

BUY

When you purchase an independently ranked book through our site, we earn an affiliate commission.

The Booker Prize made English-language fiction global

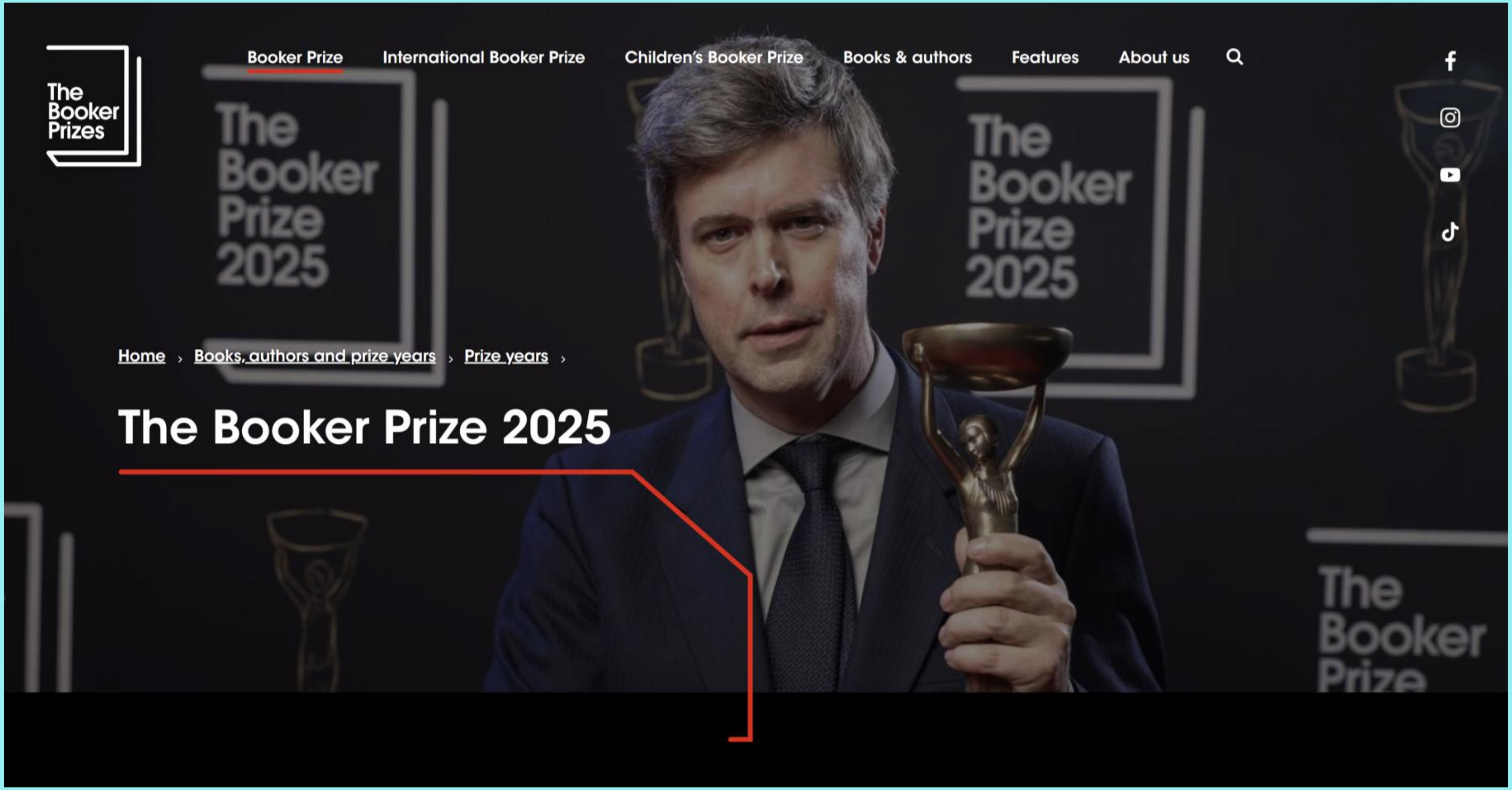

Amazon rankings democratized discovery overnight

Hindi, spoken by 600 million people as the world’s third-largest language, had none of this

Zero infrastructure

No bestseller data

No author rankings

No discovery mechanism

The consequence?

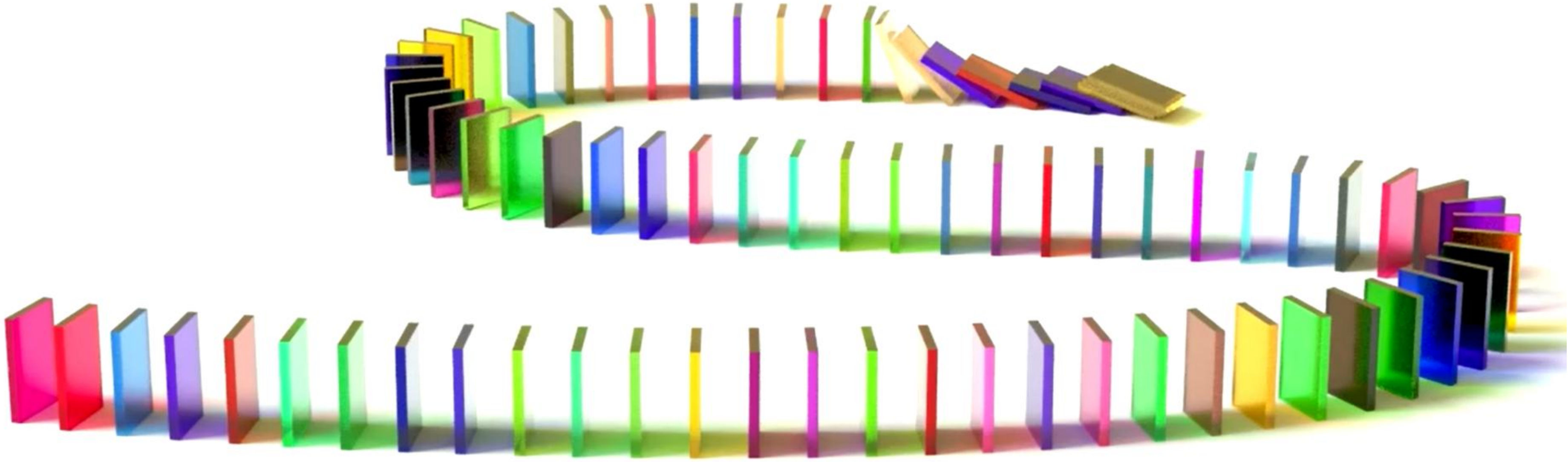

A $60mn publishing industry operating completely blind

Publishers printing books based on intuition, not relationships.

Brilliant authors dying in obscurity

Bookstores stocking based on distribution deals, not reader demand.

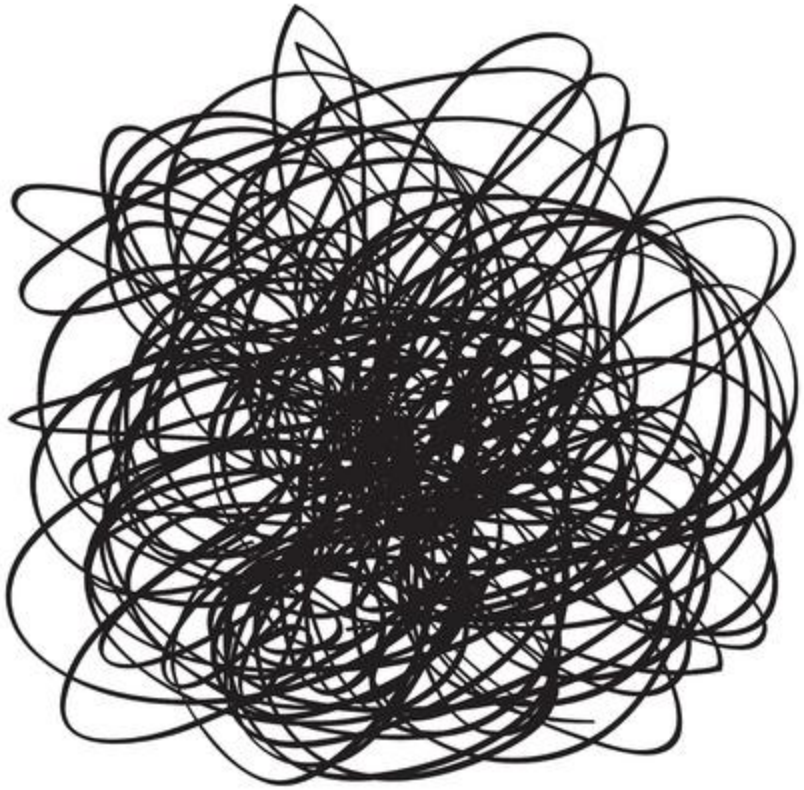

And a new generation drifting away, not from lack of pride, but from lack of fluency and confidence.

When vocabulary weakens » Reading feels harder

When reading feels harder » Books lose

This was not just
market inefficiency.

It was an existential threat to one of the world's great literary traditions.

Dainik Jagran, India's largest newspaper with 69 million readers, recognized something fundamental:

Beyond being a Hindi newspaper, we were the steward of a 1,000-year literary tradition with no operating system to carry it forward.

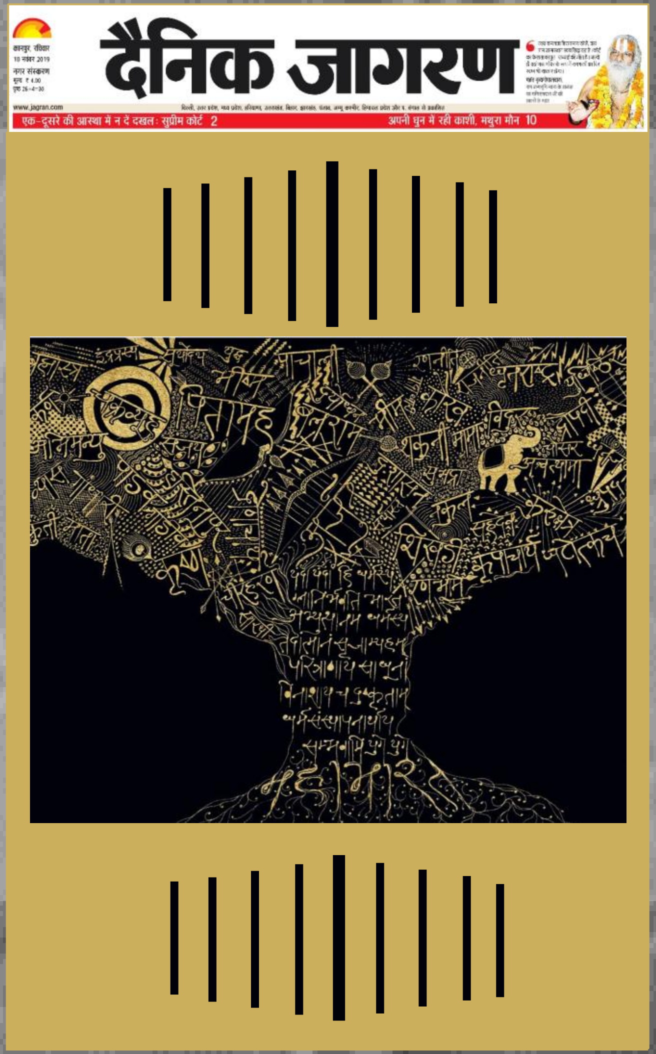

Our mission became audacious

Build, from scratch, every piece of infrastructure that English literature took 100 years to develop:

Bestseller rankings,
Literary festivals,
Author awards,
A research fellowship,
A language preservation dictionary, and
Digital content platforms.

And we need to do it within a decade.

Hence our programme : Hindi Hai Hum

दैनिक जागरण
हिंदी हैं हम

We are Hindi

दैनिक जागरण
हिंदी बेस्टसेलर

Bestseller rankings

दैनिक जागरण
संवादी

Literary festivals

दैनिक जागरण
ज्ञानवृत्ति

A research fellowship

दैनिक जागरण
कृति सम्मान

Author awards

दैनिक जागरण
शब्दार्थ

A language preservation dictionary

Digital content platforms

दैनिक जागरण
हिंदी हैं हम

Objectives

Create Market Signals

Launch India's first scientifically measured Hindi Bestseller list, making reading trends visible, credible, and conversation-worthy

Build Discovery Platforms

Establish literature festivals and digital channels where emerging voices meet mainstream audiences

Incentivize Excellence

Create awards and fellowships that attract serious literary talent back to Hindi

Restore Daily Fluency

Combat linguistic erosion through Shabdkosh, turning better Hindi into a daily habit, not a classroom lesson

Prove Viability

Demonstrate that Hindi literature can sustain a professional ecosystem, giving publishers, authors, and readers reason to invest in the language's future

An Ecosystem Built from Nothing

2017 · 2018 · 2019 · 2020 · 2021 · 2022 · 2023 · 2024 · 2025

In 9 years, we constructed what English publishing built over a century: a complete reading infrastructure where signals create trust, experiences create aspiration, and tools build daily habit.

The Bestseller Infrastructure

Partnering with Nielsen, we deployed scientific methodology across 50 cities, publishing quarterly rankings in Fiction, Non-Fiction, Poetry, and Translation.

In 2025: 78 unique titles, 72 authors recognized.

Publishers report 15-20% sales increases for ranked books. Multiple bestsellers optioned for film/OTT, a first for Hindi literary fiction.

दैनिक जागरण
हिंदी बेस्टसेलर

The Bestseller Infrastructure

Unveiling the Best Sellers list

दैनिक जागरण हिंदी बेस्टसेलर

Nielsen BookData

हिंदी हैं हम

बेस्टसेलर

(अप्रैल – जून 2025)

कथा

1. यार, पापा
   दिव्य प्रकाश दुबे, हिंद युग्म
2. UPSC वाला लव: कलेक्टर साहिबा
   कैलाश मांजू बिश्नोई, मंजुल पब्लिशिंग हाउस
3. तुम्हारी औक़ात क्या है
   पीयूष मिश्रा, राजकमल प्रकाशन
4. चाँदपुर की चंदा
   अतुल कुमार राय, हिंद युग्म
5. ठीक तुम्हारे पीछे
   मानव कौल, हिंद युग्म
6. इब्नेबतूती
   दिव्य प्रकाश दुबे, हिंद युग्म
7. कसारी मसारी
   मनोज राजन त्रिपाठी, वेस्टलैंड बुक्स
8. मौत बुलाती है
   सत्य व्यास, युवान बुक्स
9. वर्चस्व
   राजेश पाण्डेय, राधा कृष्ण प्रकाशन
10. UPSC वाला लव: कलेक्टर साहिबा –2
    कैलाश मांजू बिश्नोई, मंजुल पब्लिशिंग हाउस

कथेतर

1. मिथकों से विज्ञान तक (ब्रह्मांड के विकास की बदलती कहानी)
   गौहर रज़ा, पेंगुइन रैंडम हाउस
2. साँस के रहस्य: जो चाहें, सो पाएँ
   राजीव सक्सेना, प्रभात प्रकाशन
3. महाराणा: सहस्त्र वर्षों का धर्मयुद्ध
   डॉ. ओमेंद्र रत्नू, प्रभात प्रकाशन
4. काशी: सत्य, ज्ञान और मोक्ष का संगम स्थल
   पी. नवीन कुमार, राजमंगल प्रकाशन
5. आक्रांता: क्रूरता और षड्यंत्र
   रघु हरि डालमिया, प्रभात प्रकाशन
6. जितनी मिट्टी उतना सोना
   अशोक पाण्डे, हिंद युग्म
7. रॉ सीक्रेट एजेंट्स भारतीय गुप्तचरों के खुफिया मिशनों का रोमांचक दस्तावेज
   हर्षा शर्मा, प्रभात प्रकाशन
8. प्रोफ़ेसर की डायरी
   डॉ. लक्ष्मण यादव, अनबाउंड स्क्रिप्ट
9. रुह
   मानव कौल, हिंद युग्म
10. भारतवर्ष के आक्रांताओं की कलंक कथाएँ
    परशुराम गुप्त, प्रभात प्रकाशन

दैनिक जागरण हिंदी बेस्टसेलर

Nielsen BookData

हिंदी हैं हम

बेस्टसेलर

(अप्रैल – जून 2025)

अनुवाद

1. महागाथा: पुराणों की 100 कथाएँ
   सत्यार्थ नायक, हार्पर कोलिन्स पब्लिशर्स
2. द हिडन हिंदू 1
   अक्षत गुप्ता, प्रभात प्रकाशन
3. द नागा वॉरियर्स (बैटल ऑफ़ गोकुल खंड–1)
   अक्षत गुप्ता, मंजुल पब्लिशिंग हाउस
4. कितने गाजी आए कितने गाजी गए
   लेफ्टिनेंट जनरल के.जे.एस. 'टाईनी' ढिल्लों (रिटायर्ड), प्रभात प्रकाशन
5. द हिडन हिंदू 3
   अक्षत गुप्ता, प्रभात प्रकाशन
6. इंडिया अर्थात भारत: उपनिवेशिकता, सभ्यता, संविधान
   जे. साई दीपक, ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग
7. द हिडन हिंदू 2
   अक्षत गुप्ता, प्रभात प्रकाशन
8. एक दिन जिंदगी बदल जाएगी
   सरण्या उमाकांथन, प्रकाश बुक्स इंडिया प्रा. लि.
9. लक्ष्य UPSC: युवा IAS अधिकारियों की प्रेरक कहानियाँ
   सज्जन यादव, मंजुल पब्लिशिंग हाउस
10. महाभारत का अनावरण
    अमी गणात्रा, ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग

कविता

1. जाना ज़रुरी है क्या!
   ऐश्वर्या शर्मा, पंक्ति प्रकाशन
2. सीपियाँ
   जावेद अख़्तर, राजकमल प्रकाशन
3. कैसा कुत्ता है!
   राहगीर, हिंद युग्म
4. घर के वास्ते
   स्वयं श्रीवास्तव, युवान बुक्स
5. चाय–सी मोहब्बत
   परितोष त्रिपाठी, हिंद युग्म

हिंदी हैं हम के कार्यक्रमों की जानकारी के लिए QR कोड स्कैन करें

Best seller Rankings

The Bestseller Infrastructure

The list published in the newspaper

हिंदी हैं हम

कथा | कथेतर | अनुवाद | कविता

अप्रैल–जून, 2025 हिंदी बेस्टसेलर में कथेतर श्रेणी की सूची

www.jagran.com

11 दैनिक जागरण नई दिल्ली, 5 अगस्त, 2025

1 मिथकों से विज्ञान तक ब्रह्मांड के विकास...
लेखक: गौहर रजा
प्रकाशक: पेंगुइन रैंडम हाउस
ब्रह्मांड की उत्पत्ति कैसे और क्यों हुई। 'कैसे' से शुरू होने वाले सवाल विज्ञान की तरफ ले जाते हैं और 'क्यों' से शुरू होने वाले अध्यात्म और धर्म की तरफ।

2 सांस के रहस्य
लेखक: राजीव सक्सेना
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन
सांस का सीधा संबंध मन की स्थिति से है। सांसों में परिवर्तन कर भावनाओं, विचारों और मन को नियंत्रित कर सकते हैं। पुस्तक आसान भाषा में इन रहस्यों से पर्दा उठाने के साथ इसकी आध्यात्मिक तकनीक भी बताती है।

3 महाराणा: सहस्र वर्षों का धर्मयुद्ध
लेखक: ओमेन्द्र रत्नू
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन
एक सहस्र वर्ष तक अरावली की पहाड़ियों में यायावरों सा जीवन जीने वाले मेवाड़ के वीर योद्धाओं के कारण ही भारत में आज केसरिया लहराता है।

4 काशी : सत्य, ज्ञान और मोक्ष का संगल स्थल
लेखक: पी. नवीन कुमार
प्रकाशक: राजमंगल प्रकाशन
रील्स और वीडियो के इस जमाने में यह पुस्तक युवा पीढ़ी को काशी की आध्यात्मिक विरासत से परिचित कराती है। इसमें गलियों और घाटों का विवरण भी है।

5 आक्रांता, क्रूरता और षड्यंत्र
लेखक: रघु हरि डालमिया
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन
पुस्तक भारतीय इतिहास के उन काले अध्यायों को उजागर करती है, जहां विदेशी आक्रांताओं ने हिंदू सभ्यता को नष्ट करने और अपना शासन स्थापित करने का प्रयास किया। यह संघर्षों और चुनौतियों पर प्रकाश डालती है।

6 जितनी मिट्टी उतना सोना
लेखक: अशोक पाण्डे
प्रकाशक: हिंद युग्म
पर्यटन और संस्कृति के जिज्ञासुओं को यह पुस्तक रोमांचित करती है। साथ ही, हिमालय के एक अनजान क्षेत्र और संस्कृति से आपका परिचय कराती है।

7 रा सीक्रेट एजेंट्स
लेखक: हर्षा शर्मा
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन
पुस्तक में आपको पता चलता है कि जासूसों की जिंदगी जेम्स बांड जैसी नहीं होती, बल्कि वे सामान्य लोग ही होते हैं, जो असामान्य कार्यों को अंजाम देते हैं। उनके संघर्षों से समाज पूरी तरह बेखबर होता है।

8 प्रोफेसर की डायरी
लेखक: लक्ष्मण यादव
प्रकाशक: अनबाउंड स्क्रिप्ट
यह पुस्तक डायरी, टिप्पणियों की शैली में अपने समय की बहुत अच्छी तरह से तफ्तीश करती है। इसमें समाज और राजनीति की बड़ी परिघटनाएं हैं तो उनके बीच आकार लेते एक प्रबुद्ध युवक की कहानी भी है।

9 रूह
लेखक: मानव कौल
प्रकाशक: हिंद युग्म
कश्मीर के पथरीले और टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलते हुए जीवन के नवांकुर देखने के बाद बचपन की यादों को बहुत ही मर्मस्पर्शी ढंग से समेटते हुए आज और कल की तुलना की गई है।

10 भारतवर्ष के आक्रांताओं की कलंक कथाएं
लेखक: परशुराम गुप्त
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन
भारतवर्ष की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत व धार्मिक स्थलों पर प्रहार करने वाले विदेशी आक्रांताओं के क्रूर कृत्यों को संवेदना के साथ प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।

विस्तारित सूची

कल पढ़िये अनुवाद श्रेणी की सूची

11 डायनेमिक डीएम
लेखक: डा. हीरालाल एवं कुमुद वर्मा
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन

12 सुपरकाप अजीत डोभाल
लेखक: महेश दत्त शर्मा
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन

13 कतरनें
लेखक: मानव कौल
प्रकाशक: हिंद युग्म

14 अमानत : एक स्मृतिकोष
लेखक: अमोल पालेकर
प्रकाशक: वेस्टलैंड बुक्स

15 यार बटोही
लेखक: चौदह लेखक
प्रकाशक: हिंद युग्म

16 विभाजन की विभीषिका
लेखक: मनोहर पुरी
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन

17 स्ट्रीट वेंडर से ब्यूरोक्रेट
लेखक: मनोज कुमार
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन

18 जनादेश 2024 : हिंदुत्व की हैट्रिक
लेखक: हर्ष कुमार
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन

19 रुक जाना नहीं
लेखक: निशांत जैन
प्रकाशक: हिंद युग्म

20 जादूनामा : जावेद अख्तर एक सफर
लेखक: अरविंद मंडलोई
प्रकाशक: मंजुल पब्लिशिंग हाउस

दैनिक जागरण संवादी

The Festival Circuit

Jagran Samvadi operates across four cities (Delhi, Lucknow, Dehradun, Patna), featuring 150+ speakers annually and 5,000+ attendees.

Every session generates exclusive editorial content, keeping Hindi literary discourse in the daily news cycle year-round.

दैनिक जागरण संवादी

The Festival Circuit
150+ speakers

दैनिक जागरण संवादी

The Festival Circuit

5000+ attendees

The Festival Circuit

Exclusive editorial content, keeping Hindi literary discourse in the daily news cycle year-round.

देहरादून, सोमवार
30 जून, 2025
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16+4=20

दैनिक जागरण

www.jagran.com

उत्तराखंड, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

वैश्विक बाजार में भारतीय प्याज पर नया खतरा 13 | टी-20 मुकाबले में शतक लगाना बहुत खास 14

संपादकीय

राजनीतिक एजेंडे की भेंट चढ़ता पुरातत्व: यह आवश्यक है कि इतिहास-पुरातत्व को राजनीतिक विचारधाराओं से मुक्त रखा जाए, खासकर तब, जब क्षेत्रवाद के जरिये अलगाववाद को हवा दी जा रही हो। **विकास सारस्वत** का दृष्टिकोण।

देश और सरकार विरोध में भेद करे कांग्रेस: सरकार के फैसलों की समीक्षा कर उसे घेरना कांग्रेस का कर्तव्य है, पर वह देश हित के मुद्दों पर तो एकजुटता दिखाए। **अवधेश कुमार** का आलेख। • पेज 10

दैनिक जागरण सप्तरंग
साहित्य और संगीत का
कहानी : डर के आगे जीत है
वंशी की धुन में लोकलय का विन्यास
पेज-12

जागरण विशेष

आठ भाषाओं में 'हेट स्पीच' को पहचानेगा एआइ माडल

प्रयागराज : अब इंटरनेट मीडिया पर नफरत भरे शब्दों और अभद्र भाषा की पहचान करना आसान होगा। ऐसा आइआइआइटी के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित एआइ माडल से संभव हुआ है। पेज-13

jagran.com वेबसाइट पर पढ़ें

चीन के दोस्त बांग्लादेश को भारत ने दिया झटका, इस खास चीज के आयात पर लगाई ये कठिन शर्त; अब क्या करेंगे यूनुस?

दैनिक जागरण के दो दिवसीय अभिव्यक्ति के उत्सव के समापन समारोह में राज्यपाल ले. जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) बोले

भारतीयता और राष्ट्रीयता का प्रतिविंब है जागरण संवादी

जागरण संवाददाता, देहरादून: संवादी कार्यक्रम विचारों का मंथन ही नहीं संवेदनाओं की साझेदारी है। संवादी साहित्य, संस्कृति और कला का अनूठा संगम और आत्माओं के बीच का संवाद बन चुका है। दैनिक जागरण की इस पहल को सराहते हुए उत्तराखंड के राज्यपाल ले. जनरल गुरमीत सिंह (से. नि.) ने दैनिक जागरण परिवार को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने हिंदी के ध्वजवाहक के रूप में दैनिक जागरण के इस प्रयास को भारतीयता और राष्ट्रीयता का प्रतिविंब बताया। राज्यपाल ने कहा कि हिंदी देश को एकता के सूत्र में पिरोती है, हिंदी हृदय और अंतरात्मा की भाषा है। उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र के प्राण उसके साहित्य में समाहित होते हैं। साहित्य के बिना राष्ट्र का कोई मूल्य नहीं।

रविवार को फेयरफील्ड बाय मैरियट में दैनिक जागरण के 'हिंदी हैं हम' अभियान के अंतर्गत दो दिवसीय संवादी कार्यक्रम के समापन समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने संवादी के 13 सत्रों के लिए चुने गए विषयों की सराहना की। कहा कि इस आयोजन में सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को छूते हुए व्यापक मंथन और चिंतन किया गया। उन्होंने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से दैनिक जागरण ने विषय विशेषज्ञों, प्रबुद्धजनों व आम जनमानस के बीच सेतु का कार्य किया गया। अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि सभ्यता, संस्कृति और विरासत को बचाने और इसे आगे बढ़ाने के लिए संकल्पबद्ध हों। उन्होंने कहा कि जहां चिंतन-मनन होता है, वहां समाधान भी जरूर निकलता है। संवादी कार्यक्रम ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अलख जगाई है। राज्यपाल ने कहा कि हिंदी भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है और हमारी संस्कृति, संस्कारों की वाहक है।

इस अवसर पर मंच पर दैनिक जागरण के राज्य संपादक मनोज कुमार झा व महाप्रबंधक अनुराग गुप्ता भी उपस्थित रहे। मंच का संचालन दैनिक जागरण के एसोसिएट एडिटर अनंत विजय ने किया।

- जागरण संवादी की सराहना करते हुए जागरण समूह को दी शुभकामनाएं, हिंदी का ध्वजवाहक बनने का किया आह्वान
- संवादी के मंथन को सृजन व समाधान की ओर ले जाने पर दिया जोर, इस आयोजन को बताया भारतीयता की पहचान

डिजिटल युग में प्रिंट मीडिया की बढ़ी विश्वसनीयता

राज्यपाल ने कहा कि डिजिटल क्रांति के युग में सूचनाओं का प्रसार बढ़ा है। हालांकि, डिजिटल माध्यम से प्राप्त सूचनाओं की विश्वसनीयता नहीं है। ऐसे दौर में प्रिंट मीडिया की भूमिका और विश्वसनीयता बढ़ी है। दैनिक जागरण वर्षों से इस जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहा है। प्रिंट मीडिया आने वाले समय में और सशक्त होगा।

देहरादून में रविवार को दैनिक जागरण के दो दिवसीय संवादी कार्यक्रम के समापन सत्र को संबोधित करते उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) • जागरण

सूर्योदय की तरह ज्ञान का प्रकाश फैलाता है दैनिक जागरण

राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने विश्व में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले समाचार पत्र दैनिक जागरण की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हर सुबह सूर्योदय होने के साथ चारों ओर प्रकाश फैलता है, उसी प्रकार दैनिक जागरण प्रत्येक सुबह ज्ञान का प्रकाश चारों ओर प्रसारित करता है। उन्होंने जागरण परिवार को राष्ट्रीयता, भारतीयता के साथ ही रचनाशील व विचारशील होकर राष्ट्र निर्माण में भूमिका निभाने के लिए शुभकामनाएं दीं।

राज्यपाल के पांच आह्वान

- राष्ट्र सर्वोपरि
- एकता एवं अखंडता
- हमारी पहचान
- वर्ष 2047 तक विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत व विश्वगुरु भारत
- अर्थव्यवस्था और तकनीकी सशक्तीकरण

युवाओं से उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत बचाने की अपील

राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से. नि.) ने मंच से समूचे उत्तराखंड के युवाओं से प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को बचाने और संवारने की अपील की। उन्होंने भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए संस्कृति और परंपराओं का ध्वजवाहक बनने का भी आह्वान किया।

विस्तार से पढ़ें पेज • जागरण सिटी II, III व IV

हिंदी में रचनात्मकता का संकट | अमोल की अमानत | दमन के 50 वर्ष | माटी की महक | लिखते लिखते प्यार हो जाए | ट्रंप हुए स्टंप

सरकारी कर्मी की मानसिक रूप से अक्षम संतान परिवार पेंशन पाने की अधिकारी

माला दीक्षित • जागरण

नई दिल्ली : परिवार पेंशन के अधिकार पर मद्रास हाई कोर्ट ने एक अहम फैसला देते हुए कहा है कि सरकारी कर्मचारी की मानसिक रूप से अक्षम संतान परिवार पेंशन पाने की अधिकारी है। इस निर्णय में कोर्ट ने स्पष्ट किया कि मानसिक रूप से अक्षम संतान को आय का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसके लिए केवल एक मेडिकल सर्टिफिकेट दिखाना पर्याप्त होगा, जिसमें उसकी शारीरिक अक्षमता के कारण आजीविका कमाने में असमर्थता का उल्लेख हो।

कोर्ट ने यह भी कहा कि पेंशन को एक अधिकार माना जाना चाहिए, न कि यह कोई खैरात या उपहार है। जब मानसिक रूप से असमर्थ व्यक्ति को पेंशन का लाभ देने की बात आती है तो संबंधित प्राधिकरण को तत्परता दिखानी चाहिए। यह दृष्टिकोण उस परोपकारी उद्देश्य को पूरा करेगा जिसके लिए विधायी नियम बनाए गए हैं और इसे संविधान के अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) के एक पहलू के रूप में देखा जाना चाहिए।

मद्रास हाई कोर्ट की मदुरै बेंच के न्यायाधीश जीआर स्वामीनाथन और जस्टिस के. राजशेखर की पीठ ने 19 जून 2025 को दिए गए फैसले में सेंट्रल सिविल सर्विस रूल (सीसीएस पेंशन रूल) 54(6) का उल्लेख किया। इस नियम के अनुसार, यदि सरकारी कर्मचारी का बेटा या बेटी किसी विकलांगता या मानसिक रूप से अक्षम है और वह 25 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद भी जीवकोपार्जन में असमर्थ है तो उसे जीवनभर परिवार पेंशन मिलेगी।

- मद्रास हाई कोर्ट ने कहा- नहीं दिखाना होगा आय प्रमाणपत्र उसके लिए मेडिकल सर्टिफिकेट दिखाना ही पर्याप्त

बिहार में मतदाताओं को देना होगा जन्म स्थान का प्रमाण

नई दिल्ली : निर्वाचन आयोग जल्द ही 2003 की बिहार की मतदाता सूची को अपनी वेबसाइट पर अपलोड करेगा ताकि लगभग 4.96 करोड़ मतदाता जिनके नाम इसमें शामिल हैं, वे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के लिए नामांकन प्रपत्र के साथ संलग्न करने के लिए अपने नामों से संबंधित हिस्से को निकाल सकें।

विस्तृत समाचार » पेज 13

मोटर बीमा लेते वक्त नुकसान से बचा सकती छोटी सी सावधानी

नई दिल्ली : मानसून के दौरान सड़कों पर पानी भर जाना, अप्रत्याशित बाढ़, फिसलन भरी सड़कें से ड्राइविंग जोखिम काफी बढ़ जाता है। ऐसे में एक व्यापक मोटर बीमा पालिसी आपके वाहन को संभावित नुकसान से बचाती है और बारिश में ड्राइविंग के दौरान आपको एक आत्मविश्वास भी देती है।

विस्तृत समाचार » पेज 13

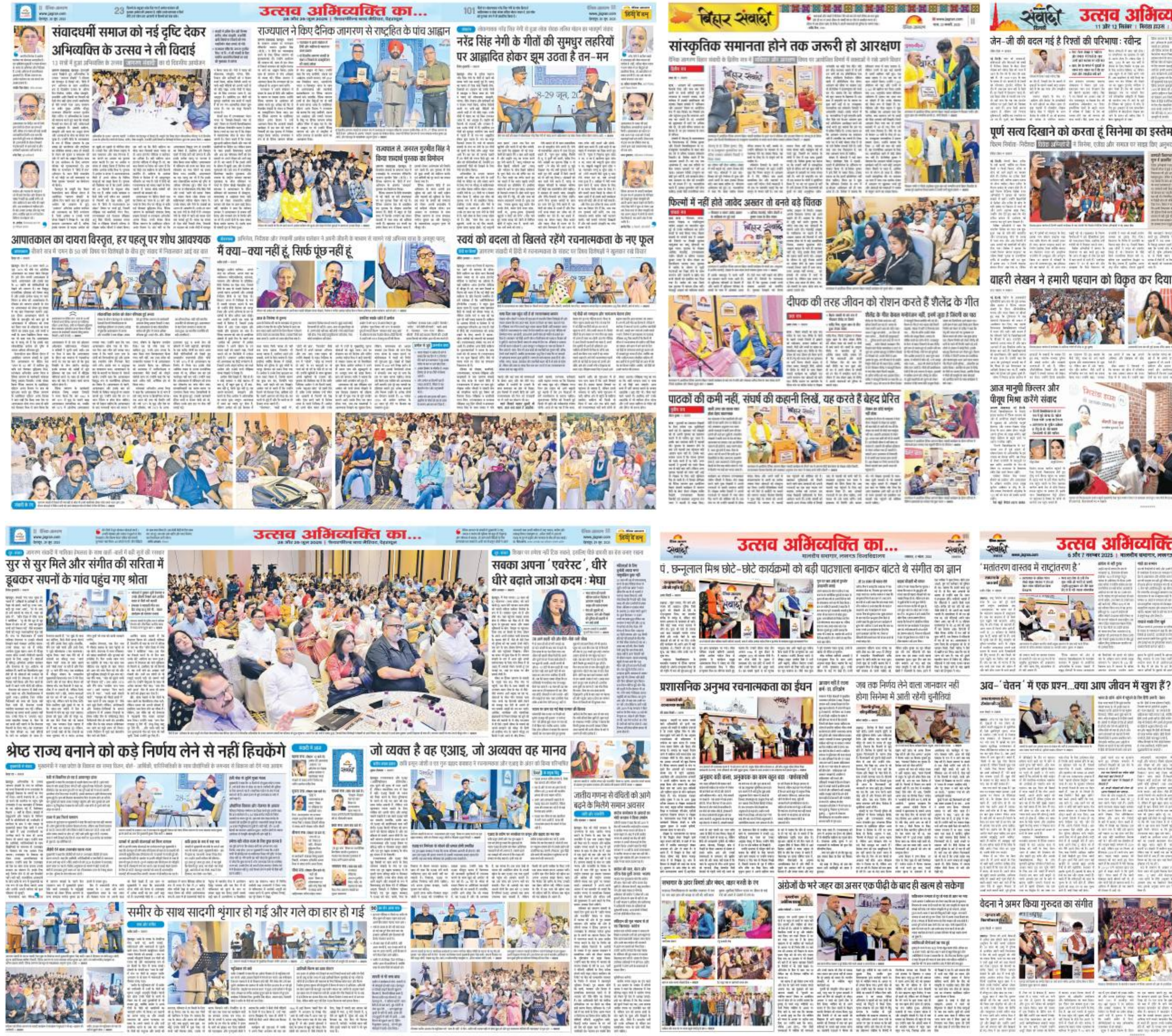

संवादधर्मी समाज को नई दृष्टि देकर अभिव्यक्ति के उत्सव ने ली विदाई

उत्सव अभिव्यक्ति का...

राज्यपाल ने किए दैनिक जागरण से राष्ट्रहित के पांच आह्वान

नरेंद्र सिंह नेगी के गीतों की सुमधुर लहरियों पर आह्लादित होकर झूम उठता है तन-मन

बिहार संवादी

सांस्कृतिक समानता होने तक जरूरी हो आरक्षण

संवादी उत्सव अभिव्यक्ति का

The Festival Circuit

Samwadi promotional advertising

दैनिक जागरण

कृति सम्मान

The Awards Ecosystem

Jagran Kriti Sammaan rewards writing with evidence, not reputation, honoring authors from bestseller rankings plus jury citations, giving Hindi its first data-backed recognition platform.

दैनिक जागरण
कृति सम्मान

The Awards Ecosystem

Awards given away by India's Home Minister

दैनिक जागरण
कृति सम्मान

The Awards Ecosystem

Audience at the Awards ceremony

दैनिक जागरण
कृति सम्मान

The Awards Ecosystem

Awards content celebrating the winners

www.jagran.com
राष्ट्रीय जागरण
नई दिल्ली, 10 अक्टूबर, 2025 दैनिक जागरण 13

आज प्रदान किया जाएगा जागरण साहित्य सृजन सम्मान

- 11 लाख रु. की राशि से सम्मानित होंगे चयनित लेखक, गृहमंत्री अमित शाह देंगे पुरस्कार
- दैनिक जागरण के पूर्व प्रधान संपादक नरेन्द्र मोहन जी की स्मृति में दिया जा रहा है सम्मान

अमित शाह देंगे व्याख्यान

चयन समिति के सदस्य

सबके प्रणम्य, सबकी प्रेरणा थे नरेन्द्र मोहन जी

दैनिक जागरण हिंदी हैं हम
साहित्य सृजन सम्मान
नरेन्द्र मोहन पूर्व प्रधान संपादक की स्मृति में
दैनिक जागरण नई दिल्ली, 11 अक्टूबर, 2025

डा. मधुकर को जागरण साहित्य सृजन सम्मान

उम्र का ध्यान रख शाह ने मंच से नीचे उतर किया सम्मानित

बेस्टसेलर की चार श्रेणियों के लेखकों का हुआ सम्मान

साहित्य सृजन को बढ़ावा देगी दैनिक जागरण की पहल : प्रसून जोशी

'दैनिक जागरण के हिंदी हैं हम अभियान को मेरा पूर्ण समर्थन'

'जिस अखबार से शुरू से जुड़ा हूं, उसी से सम्मान पाकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं'

मधुकर की रचनाओं में पौराणिकता और आधुनिकता का अद्भुत संयोग

घुसपैठियों के लिए अपनाई गई है 3डी नीति : शाह

दो वर्ष बाद गाजा में बंदूकें हुईं शांत-सांसों को मिला सुकून

अमेरिका में संघीय कर्मियों की छंटनी शुरू

हरियाणे में हो सकता है देशव्यापी एसआइआर, आगामी चुनाव वाले राज्यों से होगी शुरुआत

दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति

The Research Pipeline

Gyanvritti Fellowship funds original Hindi scholarship in sociology, economics, political science, and history.

With INR 75,000 monthly stipends matching international standards, we have attracted 350+ applicants and published three scholarly books, proving Hindi can produce new knowledge, not just preserve heritage.

Apply for Gyanvriti, if you are keen to do original research work in Hindi

दैनिक जागरण
कृति सम्मान

The Research Pipeline

Calling all researchers

भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ेगी जागरूकता

दैनिक जागरण
ज्ञानवृत्ति
• अध्ययन • चिंतन • शोध

- दैनिक जागरण के अभियान 'हिंदी हैं हम' के अंतर्गत एक और सार्थक पहल
- आवेदन की अंतिम तिथि 30 जनवरी है, शोधार्थियों को मिलेगा 75,000 रु. प्रतिमाह

प्रोफेसर हीरामन तिवारी, ज्ञानवृत्ति निर्णायक समिति के सदस्य

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: अपनी भाषा हिंदी में मौलिक शोध को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के द्वितीय संस्करण का आरंभ हो चुका है। आवेदनकर्ताओं को ज्ञानवृत्ति के अंतर्गत राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र आदि में एक हजार शब्दों में एक सिनाप्सिस भेजना होगा। इसके आधार पर दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के सम्मानित निर्णायक मंडल मंथन कर विषय और शोधार्थी का चयन करेंगे।

दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति को लेकर आज हम चर्चा कर रहे हैं निर्णायक मंडल के सदस्य प्रोफेसर हीरामन तिवारी से, जो जेएनयू, नई दिल्ली में इतिहास अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष हैं। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के बारे में आपकी क्या राय है? इस पर वह कहते हैं, ज्ञानवृत्ति की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। यह आयोजन भारतीय शोध विधा, भारतीय ज्ञान संचय और लेखन की परंपरा व लेखन की कला के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित होगा। इससे लेखन, चिंतन, भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। देश की संस्कृति, इतिहास और दर्शन पर शोध पत्र या शोध प्रबंध लिखने से भावी पीढ़ियों के लिए अच्छे ग्रंथ तैयार होंगे।

आप शोधार्थियों से क्या अपेक्षा करते हैं कि वे किस तरह की प्रविष्टि भेजें? इस पर प्रोफेसर हीरामन तिवारी कहते हैं, प्राथमिक अपेक्षा यह है कि शोधकर्ता मौलिक विषय चुनें। चाहे वह राजनीति, साहित्य, समाजशास्त्र, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास हो या हमारी जीवनशैली। यदि शोधार्थी मौलिक विषय चुनते हैं तो वह उनके बौद्धिक स्तर और उनकी चिंतन प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करेगा। ज्ञानवृत्ति का प्रयास लोगों को राजनीति, संस्कृति, धर्म, स्थानीय परंपराओं के बारे में सोचने-लिखने हेतु जागरूक करना है।

हिंदी में शोध लेखन से क्या लाभ होगा? इस पर प्रोफेसर हीरामन तिवारी कहते हैं कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। हिंदी हमारी मातृभाषा है। दैनिक जागरण ने हिंदी भाषा और लेखन को लेकर दशकों से अथक प्रयास किया है। भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी संस्कृति, इतिहास और स्वयं को जान सकता है। यदि भाषा लुप्त होती है तो संस्कृति और चिंतन का पतन हो जाता है। देश के 70 प्रतिशत से अधिक लोग हिंदी बोलते व समझते हैं। हमारे लिए हिंदी मां के समान है। जिस तरह एक बच्चा मां के गर्भ में सुरक्षित और स्वाभाविक महसूस करता है, उसी तरह हिंदी में लिखने, सोचने और बोलने में सहजता और आत्मीयता का भाव होता है।

किन विषयों पर अधिक शोध होना चाहिए? इस बारे में प्रोफेसर हीरामन तिवारी कहते हैं, मुझे लगता है कि इतिहास, संस्कृति, कला, लोक कथाएं और लोक परंपराएं आदि प्रमुख विषय हैं। हम राजनीति को रोज जीते हैं, लेकिन शोध इस बात पर भी केंद्रित होना चाहिए कि हम संस्कृति और समाज के माध्यम से अपने देश को कैसे देखते हैं। हमारी सभ्यता प्राचीन है और हमें देखने की आवश्यकता है कि यह कैसे आगे बढ़ती है, चाहे वह आर्थिक प्रगति हो, सांस्कृतिक, साहित्यिक या कलात्मक प्रगति हो। ये विषय शोधकर्ताओं और हिंदी में लिखने वालों के लिए लाभदायक होंगे।

दैनिक जागरण ज्ञानवृति के आवेदन फार्म, नियम और शर्तों के लिए लाग इन करें
https://jagranhindi.in/dainik-jagran-gyanvritti/

अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें क्यूआर कोड

हिंदी में शोध को बढ़ावा देने का उपक्रम

दैनिक जागरण
ज्ञानवृत्ति
• अध्ययन • चिंतन • शोध

- दैनिक जागरण के अभियान 'हिंदी हैं हम' के अंतर्गत एक और सार्थक पहल, ज्ञानवृत्ति के शोधार्थियों को मिलेगा 75,000 रु. प्रतिमाह
- आवेदन की अंतिम तिथि 30 जनवरी, 2026

प्रो. हीरामन तिवारी

प्रो. हिना सिंह

प्रो. प्रमोद कुमार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: अपनी भाषा हिंदी में मौलिक शोध को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के द्वितीय संस्करण की शुरुआत हो चुकी है। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के अंतर्गत राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, अर्थनीति और कूटनीति आदि में मौलिक शोध कराने के लिए शोधार्थियों से आवेदन आमंत्रित करने की तिथि घोषित कर दी गई है। आवेदन आरंभ हो चुके हैं और अंतिम तिथि 30 जनवरी, 2026 है। आवेदन केवल आनलाइन ही स्वीकार किए जाएंगे। आवेदनकर्ताओं को संबंधित विषय पर हजार शब्दों में एक सिनाप्सिस भेजना होगा। इसके आधार पर दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के सम्मानित निर्णायक मंडल मंथन कर विषय और शोधार्थी का चयन करेंगे।

निर्णायक मंडल द्वारा चयनित विषय पर शोधार्थी को कम से कम छह महीने और अधिकतम नौ महीने के लिए दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति दी जाएगी। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार हर महीने 75,000 रु. मानदेय दिए जाने का प्रविधान है। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के दौरान चयनित शोधार्थी को हर तीन महीने पर अपने कार्य की प्रगति रिपोर्ट विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत करनी होगी। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के अंतर्गत किए गए शोधकार्य के प्रकाशन में दैनिक जागरण सहायता करेगा। पुस्तक पर शोधार्थी का सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के दायरे को ध्यान में रखते हुए निर्णायक मंडल के सदस्यों का चयन किया गया है। चयन मंडल में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के इतिहास अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. हीरामन तिवारी, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित मिरांडा हाउस कालेज में राजनीति विज्ञान विभाग की प्रोफेसर डा. हिना सिंह और भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली के प्रोफेसर प्रमोद कुमार हैं। इन तीन के अलावा दैनिक जागरण के प्रतिनिधि भी रहेंगे। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के आवेदन फार्म, नियम और शर्तों के लिए लाग इन करें https://jagranhindi.in/dainik-jagran-gyanvritti/

अधिक जानकारी के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

हिंदी में मौलिक शोध का प्रकल्प

दैनिक जागरण
ज्ञानवृत्ति
• अध्ययन • चिंतन • शोध

- दैनिक जागरण के अभियान 'हिंदी हैं हम' के अंतर्गत एक और सार्थक पहल
- आवेदन की अंतिम तिथि 30 जनवरी है, शोधार्थियों को मिलेगा 75,000 रु. प्रतिमाह

प्रोफेसर प्रमोद कुमार, ज्ञानवृत्ति निर्णायक समिति के सदस्य

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: अपनी भाषा हिंदी में मौलिक शोध को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के द्वितीय संस्करण की शुरुआत हो चुकी है। आवेदनकर्ताओं को ज्ञानवृत्ति के अंतर्गत राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र आदि में एक हजार शब्दों में एक सिनाप्सिस भेजना होगा। इसके आधार पर दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के सम्मानित निर्णायक मंडल मंथन कर विषय और शोधार्थी का चयन करेंगे।

दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति को लेकर आज हम चर्चा कर रहे हैं निर्णायक मंडल के सदस्य भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के प्रोफेसर प्रमोद कुमार से। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के बारे में आपकी क्या राय है? इस पर वह कहते हैं, मैं समझता हूं कि यह दैनिक जागरण द्वारा आरंभ की गई अनुकरणीय पहल है। देश में शोध की गुणवत्ता पर आज भी गंभीर प्रश्न हैं। ज्यादातर कापी-पेस्ट आधारित शोध हो रहे हैं। मौलिक चिंतन का घोर अभाव है। भारतीय भाषाओं में तो स्थिति और भी गंभीर है। जिसे अंग्रेजी नहीं आती, वह भी अंग्रेजी में शोध लिखता है। कापी-पेस्ट से उन्हें शोध उपाधि तो मिल जाती है, लेकिन उससे देश और समाज का कोई भला नहीं होता। हमारे देश में करीब 40,000 शोध उपाधियां प्रतिवर्ष प्रदान की जाती हैं, लेकिन उनका देश और समाज की वर्तमान समस्याओं से कोई वास्ता नहीं होता है। ऐसे में हिंदी भाषा में मौलिक शोध को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जागरण की इस पहल का अभिनंदन किया जाना चाहिए।

आप शोधार्थियों से क्या अपेक्षा रखते हैं कि वे किस तरह की प्रविष्टि भेजें? इस बारे में प्रो. प्रमोद कुमार कहते हैं, शोध का मूल उद्देश्य नवीन ज्ञान की खोज अथवा ज्ञात तथ्यों की युगानुकूल व्याख्या होता है। इस दृष्टि से शोध का विषय देश-दुनिया की वर्तमान समस्याओं के समाधान पर केंद्रित हो, शोध प्रश्न प्रासंगिक हों, डाटा संकलन में मौलिकता हो और संदर्भों का मानक पद्धति से सही विवरण दिया जाए।

हिंदी में शोध लेखन से क्या फायदा होगा? इस पर प्रो. प्रमोद कुमार कहते हैं, देश की करीब आधी जनसंख्या हिंदी भाषी है। इसके अलावा बहुत बड़ी आबादी हिंदी समझती है। यह एक प्रकार से बहुत बड़ा बाजार है। यह वैज्ञानिक तथ्य है कि व्यक्ति मौलिक चिंतन अपनी मातृभाषा में ही करता है, इसलिए हर देश अपनी भाषा में ही शोध और नवाचार को बढ़ावा देता है। फिर हम क्यों अपनी भाषा को नजरअंदाज करें। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति से मौलिक शोध को प्रोत्साहन मिलेगा।

किन विषयों पर शोध अधिक होने चाहिए? इस बारे में प्रो. प्रमोद कुमार कहते हैं, देश और समाज की वर्तमान चुनौतियों से जुड़े विषयों पर शोध होगा तो समाज को उसका तुरंत लाभ मिलेगा। एआइ के उपयोग व दुरुपयोग से जुड़े विषय भी हो सकते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े अनेक विषय हैं, जिनका अध्ययन वर्तमान में बहुत उपयोगी है। इसी प्रकार साहित्य और संचार से जुड़े विषय भी हो सकते हैं। कुल मिलाकर, शोध की सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक उपादेयता स्पष्ट होनी चाहिए।

दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के आवेदन फार्म, नियम और शर्तों के लिए लाग इन करें
https://jagranhindi.in/dainik-jagran-gyanvritti/

अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें क्यूआर कोड

भारतीय ज्ञान परंपरा की संवाहक

दैनिक जागरण
ज्ञानवृत्ति
• अध्ययन • चिंतन • शोध

- दैनिक जागरण के अभियान 'हिंदी हैं हम' के अंतर्गत एक और सार्थक पहल
- आवेदन की अंतिम तिथि 30 जनवरी है, शोधार्थियों को मिलेगा 75,000 रु. प्रतिमाह

प्रोफेसर (डा.) हिना सिंह, ज्ञानवृत्ति निर्णायक समिति की सदस्य

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: अपनी भाषा हिंदी में मौलिक शोध को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के द्वितीय संस्करण का आरंभ हो चुका है। आवेदनकर्ताओं को ज्ञानवृत्ति के अंतर्गत राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र आदि में एक हजार शब्दों में एक सिनाप्सिस भेजना होगा। इसके आधार पर दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के सम्मानित निर्णायक मंडल मंथन कर विषय और शोधार्थी का चयन करेंगे।

दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति को लेकर आज हम चर्चा कर रहे हैं निर्णायक मंडल की सदस्य डा. हिना सिंह से, जो मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग की प्रोफेसर हैं। दैनिक जागरण ज्ञानवृत्ति के बारे में आपकी क्या राय है? इस पर वह कहती हैं, हिंदी को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जागरण द्वारा एक दूरदर्शी, समयानुकूल व अत्यंत सराहनीय पहल है। ये योजना हिंदी को शैक्षणिक, बौद्धिक और शोध भाषा के रूप में स्थापित करने में मदद करेगी। यह देश की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उस मूल भावना के अनुरूप है, जिसमें भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा, शोध और ज्ञान सृजन को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है। मेरे विचार से जो भारतीय ज्ञान परंपरा थी, उसे हम कहीं न कहीं भूलने लगे थे, उसको फिर से आगे बढ़ाने का अच्छा प्रयास है। इस पहल के द्वारा हिंदी की व्यापकता बढ़ेगी।

आप शोधार्थियों से क्या अपेक्षा करती हैं कि वे किस तरह की प्रविष्टि भेजें? इस पर डा. हिना सिंह कहती हैं, मैं शोधार्थियों से अपेक्षा करती हूं कि वे प्रविष्टि में मौलिकता का विशेष ध्यान रखें, साथ ही शोध प्रस्ताव में कुछ बिंदुओं पर पहल करें, जैसे कि उसका उद्देश्य क्या है, वे जो विषय ले रहे हैं उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय प्रासंगिकता क्या है। शोध सकारात्मक हो, साथ ही भारतीय संदर्भ और ज्ञान परंपरा के बीच एक संवाद स्थापित कर सके।

हिंदी में शोध लेखन से क्या लाभ मिलेगा? इस बारे में डा. हिना सिंह कहती हैं कि हिंदी में शोध लेखन के बहुत सारे दूरगामी लाभ मिलेंगे। देश में 60-70 करोड़ लोग हिंदी बोलने और समझने वाले हैं। हिंदी में किया गया शोध अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सकेगा। इससे ज्ञान अधिक सुलभ होगा और समावेशी बनेगा। हिंदी ज्ञान और विमर्श की सशक्त भाषा के रूप में स्थापित होगी। आने वाली पीढ़ियां भी इससे काफी कुछ सीखेंगी और लोग हिंदी बोलने में गर्व का अनुभव करेंगे।

किन विषयों पर शोध अधिक होने चाहिए? इस पर डा. हिना सिंह कहती हैं, मुझे लगता है कि जितने भी समकालीन मुद्दे हैं और जिनका समाधान अभी सही रूप में नहीं मिल पाया है, उन पर होना चाहिए। इसे हम एक बड़े स्तर पर देखें, जैसे जलवायु परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन आदि। मेरे विचार से हिंदी में इन विषयों पर बहुत अधिक काम नहीं हो पाया है। इसके अलावा कोई ऐसा मुद्दा जो राजनीति, कूटनीति, सार्वजनिक नीति, समाज, आत्मनिर्भरता और भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ा हो। इन विषयों पर शोध अधिक होने चाहिए।

दैनिक जागरण ज्ञानवृति के आवेदन फार्म, नियम और शर्तों के लिए लाग इन करें
https://jagranhindi.in/dainik-jagran-gyanvritti/

अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें क्यूआर कोड

दैनिक जागरण
शब्दार्थ

The Habit Engine

Jagran Shabdarth (a book of word meanings) evolved from our newspaper column "Bhasha ki Pathshala" (the language classroom) to address a modern problem: linguistic shortcuts eroding fluency.

By decoding etymology, usage, and nuance, Shabdarth makes better Hindi usable in everyday life, reducing friction in reading and strengthening confidence in expression.

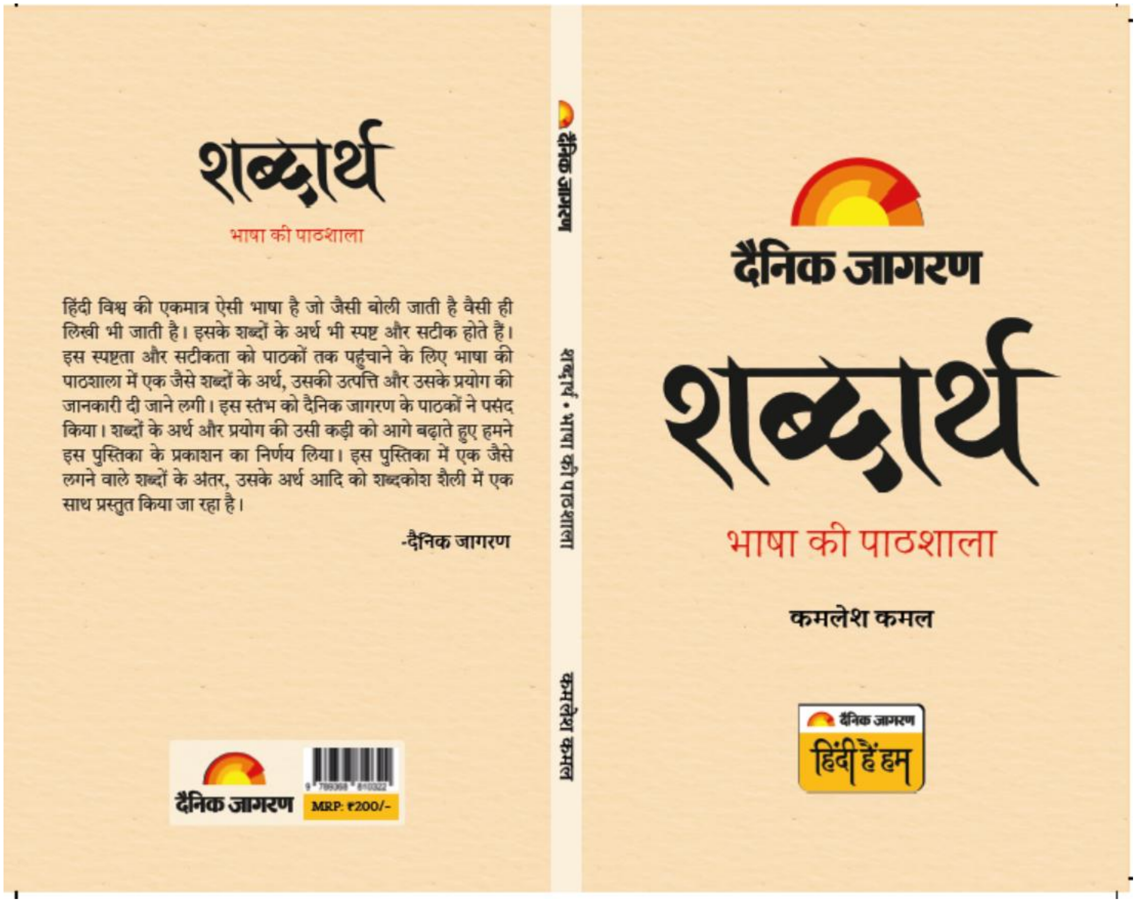

दैनिक जागरण
शब्दार्थ

The Habit Engine

Source code : The material for Shabdarth evolved from our newspaper column "Bhasha ki Pathshala" (The language classroom), to address a modern problem: linguistic shortcuts eroding fluency.

भाषा की पाठशाला

कमलेश कमल
नई दिल्ली

दैनिक जागरण हिंदी हैं हम

आज के शब्द : अवलोकन, पुनरवलोकन, विलोकन, सिंहावलोकन और विहंगावलोकन

पुनरवलोकन : अवलोकन का अर्थ है देखना, जिसमें 'अव' उपसर्ग का अर्थ नीचा, हीन आदि है। निकट अथवा नीचे रखी वस्तु, जैसे पुस्तक आदि का अवलोकन किया जाता है। किसी वस्तु को दुबारा देखने के लिए 'पुनरवलोकन' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'पुनरावलोकन' लिखना उचित नहीं है। अवलोकन में 'पुनर्' (अर्थ : दुबारा) उपसर्ग लगकर 'पुनरवलोकन' शब्द बनेगा, न कि पुनरावलोकन।

विलोकन : विलोकन का अर्थ है विशेष रूप से या अच्छी तरह देखना, जिसमें 'वि' उपसर्ग विशेष का द्योतक है। अगर दुबारा अच्छी तरह देखना हो, तो उसके लिए शब्द है पुनर्विलोकन (पुनरविलोकन अशुद्ध है।)। हम जानते हैं कि न्यायिक प्रक्रिया में पुनर्विलोकन याचिका के अंतर्गत दुबारा अच्छी तरह मामले को देखने का अनुरोध किया जाता है।

विहंगावलोकन : इस शब्द का अर्थ है विहंग या पक्षी की भांति पैनी निगाह से देखना। आसमान की ऊंचाई पर उड़ रहा एक पक्षी जमीन पर गिरे अनाज के एक दाने को भी देख लेता है। इसी से शब्द बना 'विहंगम-दृष्टि'। स्पष्ट है कि विहंगावलोकन में सूक्ष्म और पैनी-दृष्टि अपेक्षित होती है।

सिंहावलोकन : यह शब्द बना है 'सिंह + अवलोकन' से। सिंह जब चलता है तो थोड़ी-थोड़ी देर बाद गर्दन घुमाकर पीछे देखता है कि सब ठीक तो है। गर्वित वनराज का पलटकर देखना आत्मविश्वास से पूर्ण होता है; लेकिन इसमें सूक्ष्म नहीं, अपितु व्यापक दृष्टि होती है। पता होता है कि सब ठीक ही है; तथापि पीछे मुड़कर एक बार सुनिश्चित किया जाता है।

विशेष : दृष्टि शब्द की व्युत्पत्ति 'दृश' धातु से है। 'दृश' धातु का अर्थ है देखना, अवलोकन करना, नजर डालना, निरीक्षण करना, निहारना, दृष्टिगोचर करना, खोज करना, दर्शन करना इत्यादि। आंख को 'दृशा' और 'दृशी' भी कहा जाता है, क्योंकि यह देखने के काम आती है। जो देखने में मदद करे, ऐसे गुरु को 'दृशान' कहा जाता है। जो 'दृश्'; अर्थात देखने के योग्य हो, वह 'दृश्य' कहलाता है। जो देख लिया गया, वह 'दृष्ट'। दृष्टि से देखने की शक्ति, समीक्षण आदिक का अर्थ मिलता है। यही दृष्टि प्राकृत (दिट्ठी) से पालि (दिट्ठ) के रास्ते हिंदी में आकर 'दीठ' बन गया।

kamalkeekalam@gmail.com

भाषा की पाठशाला

कमलेश कमल
नई दिल्ली

दैनिक जागरण हिंदी हैं हम

आज के शब्द : बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा और प्रतिभा

बुद्धि : 'बुध्' धातु से व्युत्पन्न शब्द है। 'बुध्' धातु से बननेवाले शब्दों, यथा - बुध, बोध, विबोध, प्रबोध, संबोध इत्यादिक में जानने अथवा समझने का भाव है। जिसे बोध हो गया, वह बुद्ध (बुध्+क्त) हो गया। बुद्धि (बुध् + क्तिन्) उस जानने, समझने अथवा प्रत्यक्ष ज्ञान की संज्ञा है। जिसे बुद्धि, मति अथवा समझ आ गई, वह बुद्धिमान हो गया। बुद्धिमान का स्त्रीलिंग बुद्धिमती है। बुद्धिमत (विवेकपूर्ण) होने की अवस्था बुद्धिमत्ता है।

मेधा : मेधा में धारण करने की शक्ति अथवा स्मरणशक्ति के अच्छे होने का भाव है। मेधावी बच्चे न केवल पाठ को शीघ्र ही समझ लेते हैं, अपितु अधिक समय तक याद भी रखते हैं।

प्रज्ञा : 'प्र' का अर्थ प्रकृष्ट अथवा विशिष्ट होता है। प्रज्ञ (विशेषण) का अर्थ है 'विशेष ज्ञान युक्त', विद्वान् अथवा मेधावी। कोई व्यक्ति 'प्रज्ञ' है तो इसका अर्थ है कि उसका ज्ञान विशिष्ट है। 'प्रज्ञ' के गुण की संज्ञा 'प्रज्ञा' है। प्रज्ञा का शाब्दिक अर्थ प्रकृष्ट अथवा विशिष्ट ज्ञान है। प्रयोग में यह दार्शनिक, आध्यात्मिक आदि क्षेत्रों में ज्ञान अथवा बुद्धि का द्योतन करने वाला शब्द है। 'प्रज्ञात' शब्द का अर्थ है विशेष रूप से ज्ञात, सुविख्यात, विश्रुत आदि।

प्रतिभा : प्रतिभा में 'भा' है, जिसमें चमक, प्रकाश आदिक का भाव है (प्रति+ भा + क + टाप्=प्रतिभा)। सभा, आभा, भास्कर, भानु, प्रभा, प्रभात, विभात, सभ्य, प्रतिभाशाली इत्यादिक में भी यही 'भा' है। कहा भी जाता है कि प्रतिभा में विशेष आभा अर्थात चमक होती है।

विशेष : सभा में 'स' का अर्थ सहित है और 'भा' का अर्थ है कांति या चमक। जो साथ-साथ शोभायमान हो (सह भांति), वह सभ्य है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से 'सभ्य' शब्द 'सभा' से व्युत्पन्न हुआ है। जो सभा में बैठने योग्य है, वह सभ्य है। असभ्य वह, जो सभ्य नहीं हो, जिसमें वह चमक नहीं हो।

जानना चाहिए कि 'भा' धातु से ही बनने वाले 'प्रभा' शब्द का अर्थ है-'विशेष चमक'। सूरज को प्रभाकर इसलिए कहा जाता है; क्योंकि वह प्रभा (प्र– विशेष, भा– चमक) बिखेर कर प्रभात लाता है।

kamalkeekalam@gmail.com

भाषा की पाठशाला
कमलेश कमल
नई दिल्ली
दैनिक जागरण हिंदी हैं हम
आज के शब्द : बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा और प्रतिभा
बुद्धि : 'बुध्' धातु से व्युत्पन्न शब्द है। 'बुध्' धातु से बननेवाले शब्दों, यथा - बुध, बोध, विबोध, प्रबोध, संबोध इत्यादिक में जानने अथवा समझने का भाव है। जिसे बोध हो गया, वह बुद्ध (बुध्+क्त) हो गया। बुद्धि (बुध् + क्तिन्) उस जानने, समझने अथवा प्रत्यक्ष ज्ञान की संज्ञा है। जिसे बुद्धि, मति अथवा समझ आ गई, वह बुद्धिमान हो गया। बुद्धिमान का स्त्रीलिंग बुद्धिमती है। बुद्धिमत (विवेकपूर्ण) होने की अवस्था बुद्धिमत्ता है।
मेधा : मेधा में धारण करने की शक्ति अथवा स्मरणशक्ति के अच्छे होने का भाव है। मेधावी बच्चे न केवल पाठ को शीघ्र ही समझ लेते हैं, अपितु अधिक समय तक याद भी रखते हैं।
प्रज्ञा : 'प्र' का अर्थ प्रकृष्ट अथवा विशिष्ट होता है। प्रज्ञ (विशेषण) का अर्थ है 'विशेष ज्ञान युक्त', विद्वान् अथवा मेधावी। कोई व्यक्ति 'प्रज्ञ' है तो इसका अर्थ है कि उसका ज्ञान विशिष्ट है। 'प्रज्ञ' के गुण की संज्ञा 'प्रज्ञा' है। प्रज्ञा का शाब्दिक अर्थ प्रकृष्ट अथवा विशिष्ट ज्ञान है। प्रयोग में यह दार्शनिक, आध्यात्मिक आदि क्षेत्रों में ज्ञान अथवा बुद्धि का द्योतन करने वाला शब्द है। 'प्रज्ञात' शब्द का अर्थ है विशेष रूप से ज्ञात, सुविख्यात, विश्रुत आदि।
प्रतिभा : प्रतिभा में 'भा' है, जिसमें चमक, प्रकाश आदिक का भाव है (प्रति+ भा + क + टाप्=प्रतिभा)। सभा, आभा, भास्कर, भानु, प्रभा, प्रभात, विभात, सभ्य, प्रतिभाशाली इत्यादिक में भी यही 'भा' है। कहा भी जाता है कि प्रतिभा में विशेष आभा अर्थात चमक होती है।
विशेष : सभा में 'स' का अर्थ सहित है और 'भा' का अर्थ है कांति या चमक। जो साथ-साथ शोभायमान हो (सह भांति), वह सभ्य है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से 'सभ्य' शब्द 'सभा' से व्युत्पन्न हुआ है। जो सभा में बैठने योग्य है, वह सभ्य है। असभ्य वह, जो सभ्य नहीं हो, जिसमें वह चमक नहीं हो।
जानना चाहिए कि 'भा' धातु से ही बनने वाले 'प्रभा' शब्द का अर्थ है-'विशेष चमक'। सूरज को प्रभाकर इसलिए कहा जाता है; क्योंकि वह प्रभा (प्र– विशेष, भा– चमक) बिखेर कर प्रभात लाता है।
kamalkeekalam@gmail.com

भाषा की पाठशाला

कमलेश कमल
नई दिल्ली

आज के शब्द : कथा, कथक, कथन, अनुकथन, अभिकथन और कथोपकथन

दैनिक जागरण हिंदी हैं हम

'कथ्' धातु से निकला शब्द-समूह भाषिक-परंपरा में अत्यंत समृद्ध है। 'कथ्' में कहना, वर्णन करना, समाचार देना, संकेत करना इत्यादि सब शामिल हैं। इसी से बने 'कथनम' का तद्भव 'कथन' है; जो किसी बात को कहने की क्रिया भी है और कहे गए भाव का नाम भी।

'कथ' बोलने पर अंत में 'ह्' सुनाई देता है- यह 'त'+'ह' का ध्वन्यात्मक रूप है। प्रयत्नलाघव से 'त' लुप्त हो गया और 'कह' बन गया। यहीं से कहना, कह, कहा, कहानी इत्यादि शब्दों का परिवार विकसित हुआ। इस परिवार का प्रसिद्ध शब्द है- कथा, इसका अर्थ केवल 'कहानी' नहीं, बल्कि वृत्तांत, वर्णन या कल्पित आख्यान भी है। 'कथा' में 'वि' उपसर्ग जुड़ने पर 'विकथा' शब्द की निर्मिति है; जिसका अर्थ है असंगत, बिखरी हुई या अप्रासंगिक बातें।

'कथक' वह है, जो कथा कहता है अर्थात 'कथाकार'। यही शब्द शास्त्रीय नृत्य 'कथक' का आधार बना, जहां नृत्य के माध्यम से कथा का संप्रेषण होता है।

कथन से अनेक रूप बने- कथनी (कहने योग्य बात), कथनीय (जो कहा जा सके), कथित (जो कह दिया गया), और विपरीतार्थक- अकथ, अकथ्य, अकथनीय इत्यादि। इसी प्रकार, शब्द-व्यवहार में सूक्ष्म अर्थों के लिए कई विशिष्ट शब्द बने।

ज्ञातव्य है कि अगर एक कथन के बाद दूसरा कथन आए तो वह 'अनुकथन' कहलाता है। आरोप अथवा अभियोग लगाने के लिए 'अभिकथन' शब्द है। 'कथन के बदले (उप) कथन' के लिए शब्द बना 'कथोपकथन'। 'हितकथन' का अभिप्राय ऐसे कथन से है, जिससे किसी का भला हो सकता है। आगे संस्कृत में 'कथ्' से ही 'कथम' (कैसे, किस प्रकार) और 'कथंता' जैसे रूप बने, जो इस धातु की व्यापकता और जीवंतता को प्रमाणित करते हैं।

kamalkeekalam@gmail.com

भाषा की पाठशाला

कमलेश कमल
नई दिल्ली

आज के शब्द : ऋषि, बुद्ध, प्रबुद्ध और बुद्धू

दैनिक जागरण हिंदी हैं हम

'बुद्ध' कोई नाम (संज्ञा) नहीं, बल्कि एक विशेषण है। यह राजकुमार गौतम का विशेषण था, जो बाद में नामरूप में प्रसिद्ध हुआ। यह शब्द 'बुध्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- जानना या जागना। इसी 'बुध्' से 'बुधवार' (ज्ञान का दिन) तथा 'बुध ग्रह' (बुद्धि प्रदाता ग्रह) आदि शब्द विकसित हुए। 'बुध्' से बने 'बोध' शब्द का अर्थ है जाग्रत या ज्ञान-प्राप्त।

'मुनि' शब्द 'मनन' से बना है, जिसका अर्थ है- जो मनन करता है। 'बुद्ध' वह है, जिसमें मनन के साथ-साथ ज्ञान और बोध का भी संगम हो। 'बुद्धत्व' पूर्णता की अवस्था है; इसलिए 'प्र' या 'सम्' जैसे महत्ता बढ़ाने वाले उपसर्ग जोड़ने से भी इसका अर्थ बढ़ता नहीं, बल्कि सीमित ही होता है। यही कारण है कि 'प्रबुद्ध' या 'संबुद्ध' 'बुद्ध' के समानार्थी नहीं हो सके, वरन कमतर ही रहे। 'बुद्ध' से एक अर्थ-विपर्ययात्मक शब्द 'बुद्धू' भी बना, जो आरंभ में शांत या निष्क्रिय व्यक्ति के लिए था, पर कालांतर में मूर्ख का पर्याय बन गया।

'ऋषि' शब्द की व्याख्या तीन सरल सूत्रों में की जा सकती है, (1) ऋष् धातु से : चलना या राह दिखाना अर्थात जो दूसरों को सत्य की ओर ले जाए। (2) दृश् धातु से : देखना या दर्शन करना अर्थात जिसने सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव किया। (3) रिष् धातु से : तप या श्रम करना अर्थात् जिसने साधना से सत्य को जाना। अतः 'ऋषि' वह है जो चलकर देखे, देखकर समझे और समझकर जिए; अर्थात् तप, दर्शन और मार्गदर्शन, तीनों का संगम। इसी ऋषि से आर्ष विशेषण बना अर्थात ऋषियों से संबंध रखने वाला।

kamalkeekalam@gmail.com

भाषा की पाठशाला

कमलेश कमल
नई दिल्ली

दैनिक जागरण हिंदी हैं हम

आज के शब्द : क्षेप, आक्षेप, अभिक्षेप और भर्त्सना

क्षेप : यह शब्द बना है, 'क्षिप्' धातु से (क्षिप् + घञ् = क्षेप)। क्षेप का अर्थ है- फेंकना, उछालना, डालना इत्यादि। क्षिप्त का अर्थ है- फेंका हुआ अथवा मिलाया हुआ। प्रक्षिप्त का अर्थ है- विशेष रूप से फेंका अथवा मिलाया हुआ। किसी प्राचीन ग्रंथ में कुछ 'प्रक्षिप्त' है तो इसका आशय है कि यह मूल कृति में नहीं था; बाद में कभी जोड़ दिया गया अथवा मिला दिया गया। किसी ग्रंथ का वह अंश, जो बाद में मिलाया गया हो, 'प्रक्षिप्तांश' कहलाता है। ज्ञातव्य है कि क्षेपण (क्षिप् + ल्युट् = क्षेपण) का अर्थ है- फेंकना, भेजना, गाली देना इत्यादि। 'क्षिप्' धातु से ही बने क्षेपक (क्षिप् + ण्वुल् = क्षेपक) का अर्थ है- फेंकने वाला, बीच में मिलाने वाला, भेजने वाला इत्यादि।

आक्षेप : बना है, 'आ+क्षेप' से। इसका शाब्दिक अर्थ है, कुछ फेंकना, गिराना आदि; परंतु प्रयोग में इसका अभिप्राय किसी को निंदनीय अथवा दोषी सिद्ध करने के लिए प्रयुक्त शब्दों से होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, किसी को गलत अथवा बुरा सिद्ध करने के लिए फेंके गए (प्रयुक्त) शब्दों को आक्षेप कहते हैं। आक्षेप लगने से प्रतिष्ठा धूमिल होती है।

अभिक्षेप : यह 'आक्षेप' से प्रभाव में कम अथवा हलका होता है। अभि उपसर्ग का अर्थ- 'की ओर', 'की दिशा में', सामने आदिक है। जैसे 'अभिगम' का अर्थ 'की ओर गमन करना या जाना' है; वैसे, 'अभिक्षेप' का मूलार्थ है- किसी की ओर या किसी के प्रति कुछ फेंकना (शब्द)। यह साधारण दोषारोपण के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है। अभिक्षेप लगने से भी किसी की प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता ही है।

भर्त्सना : संस्कृत के 'भर्त्स्' से बने इस शब्द में धमकाने, झिड़कने और कड़ी निंदा करने का भाव है। 'भर्त्स्' का अर्थ है- धमकाना अथवा अपशब्द कहना। भर्त्सना शब्द का प्रयोग बुरा-भला कहने, शाप देने आदि के लिए होता है। इसमें कटुता का भाव भी उपस्थित रहता है।

kamalkeekalam@gmail.com

The Habit Engine

The book

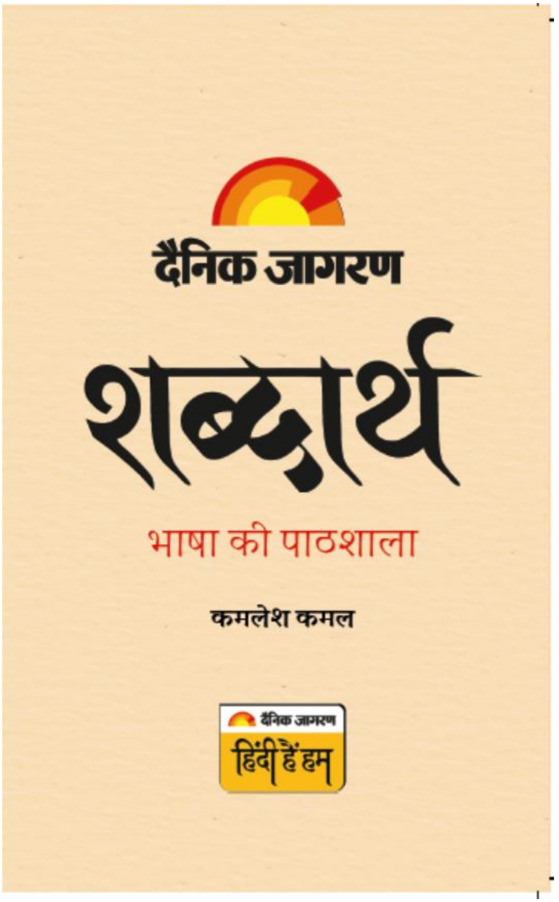

Cover Page

अनुक्रम

7 भूमिका

9 हिंदी हैं हम!

12 आरंभ और प्रारंभ

14 अंतर्राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय

16 छिपना और छुपना

18 निदेशक और निर्देशक

20 अनुकरण, अनुसरण, अनुगमन और अनुवर्तन

22 कठिन और कठोर

24 भयानक और भयंकर

26 अनभिज्ञ, अभिज्ञ, अज्ञ, विज्ञ और ज्ञ

28 आज्ञा, आदेश, अध्यादेश, अनुदेश, निदेश और निर्देश

30 सेवा, शुशूषा, चर्या, परिचर्या, सपर्या

32 अग्रिम, आगामी, अगामी, आगमी

34 वरन्, वरण, प्रवरण और प्रवर

36 शपथ, सुपथ, शाप, अभिशाप और अभिशापन

38 चिर, चीर, चिरान, चीरान

40 अच्छा, भला, बढ़िया और सुंदर

Index

1

आरंभ और प्रारंभ

अगर एक वाक्य में कहें तो 'प्रारंभ 'विशिष्ट आरंभ' है। सबसे पहले 'आरंभ' शब्द को लेते हैं। आरंभ (संज्ञा) का अर्थ 'शुरू' है। विद्यारंभ, नृत्यारंभ आदि शब्दों के अर्थ स्वत: स्पष्ट हैं। शुभारंभ में किसी शुभ कार्य का आरंभ किया जाता है अथवा किसी कार्य को आरंभ किया जाता है और उसमें शुभत्व की कांक्षा अंतर्निहित रहती है।

किसी भी सामान्य घटना की शुरुआत के लिए 'आरंभ' शब्द का प्रयोग करें, जैसे– दिन का आरंभ, कार्य का आरंभ आदि। 'मैच की शुरुआत हो चुकी है' को हम यह भी कह सकते हैं कि मैच आरंभ हो चुका है।

प्रारंभ (संज्ञा) शब्द का अर्थ 'विशिष्ट-आरंभ' से है। 'आरंभ' शब्द, जैसा कि हम जानते हैं– 'रंभ्' धातु से बनने वाले रंभ–(रंभ्+अच्) शब्द में 'आ' उपसर्ग जोड़ने से बना है। आरंभ शब्द को और तोड़ें, तो [आरंभ = आ+रभ्+ घञ् मुम च्] आता है।

द्रष्टव्य है कि इस 'आरंभ' शब्द के साथ 'प्र' उपसर्ग जोड़ने से 'प्रारंभ' शब्द निर्मित होगा। [प्र+आरंभ = प्रारंभ अर्थात् प्रकृष्ट रूप से आरंभ]

संस्कृत उपसर्ग 'प्र' का अर्थ है– उत्कृष्ट, पूर्णता, प्रवीणता इत्यादि। इसका अर्थ हुआ कि 'प्रारंभ' ऐसा आरंभ है, जिसमें वैशिष्ट्य हो, कुछ खास हो, औपचारिकता हो अथवा महत्ता हो।

Chapter 1

किसी साहित्यिक गोष्ठी के आरंभ के लिए अथवा उसकी शुरुआत के लिए 'प्रारंभ' शब्द का प्रयोग किया जाना उचित है। हम यह कह सकते हैं कि दीप-प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया गया अथवा कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

आरंभ करने के लिए आगाज करना, शुरुआत करना' अथवा 'श्री गणेश करना' का प्रयोग भी किया जाता है। इस प्रकार, 'प्रारंभ' और 'आरंभ' के मध्य वैशिष्ट्य का अंतर है– प्रयोग से पूर्व इसपर विचार करना चाहिए!

***

Chapter 1

The Habit Engine

The book going places

उत्सव अभिव्यक्ति का...

28 और 29 जून 2025 | फेयरफील्ड बाय मैरियट, देहरादून

राज्यपाल ने किए दैनिक जागरण से राष्ट्रहित के पांच आह्वान

- राज्यपाल ने अपने संबोधन में हिंदी और साहित्य के महत्व पर डाला प्रकाश
- दो दिवसीय जागरण संवादी के मंथन व निष्कर्ष के डाक्यूमेंटेशन की जताई अपेक्षा

जागरण संवाददाता, देहरादून: संवादी के समापन अवसर पर राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने हिंदी का ध्वजवाहक बनने के लिए दैनिक जागरण को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने आयोजन की सराहना की, साथ ही इस मंथन से निकले समाधान को राष्ट्रीय फलक पर लाने का आह्वान किया। इसके साथ ही जागरण से पांच अपेक्षाएं भी व्यक्त कीं। दैनिक जागरण ने आश्वस्त किया कि राज्यपाल की इन अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करेंगे।

राज्यपाल ने अपने संबोधन में संवाद के साथ ही हिंदी और साहित्य के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने दैनिक जागरण के आयोजन की प्रशंसा करते हुए अपेक्षा की कि दो दिवसीय संवादी के मंथन व निष्कर्ष का डाक्यूमेंटेशन किया जाए। इस पर दैनिक जागरण के एसोसिएट एडिटर अनंत विजय ने उन्हें आश्वस्त किया कि आगामी संवादी कार्यक्रम में इस बार की चर्चा व निष्कर्षों को एक पुस्तक में पिरोकर प्रस्तुत किया जाएगा। राज्यपाल ने मंच से ही दैनिक जागरण परिवार से पांच आह्वान भी किए। उन्होंने कहा कि राष्ट्र सर्वोपरि, एकता एवं अखंडता, हमारी पहचान, वर्ष 2047 तक विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत व विश्वगुरु भारत के साथ ही अर्थव्यवस्था और तकनीकी सशक्तीकरण पर दैनिक जागरण कार्य करे। हालांकि, दैनिक जागरण इनमें से तीन बिंदुओं पर तो वर्षों से कार्य करता आया है। एसोसिएट एडिटर अनंत विजय ने राज्यपाल को बताया कि राष्ट्र सर्वोपरि, एकता एवं अखंडता और हमारी पहचान के बिंदु पर दैनिक जागरण हमेशा अग्रिम पंक्ति में खड़ा रहा है। शेष दो आह्वान पर भी उन्होंने दैनिक जागरण की ओर से राष्ट्रहित में सदैव तत्परता से सहयोग करने का आश्वासन दिया।

दो दिवसीय जागरण संवादी के समापन सत्र में उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने दैनिक जागरण के 'हिंदी हैं हम' अभियान के अंतर्गत 'शब्दार्थ' पुस्तक का विमोचन किया। साथ में हैं दैनिक जागरण के राज्य संपादक मनोज कुमार झा (बायें) और देहरादून के महाप्रबंधक अनुराग गुप्ता • जागरण

Book unveiled at Jagran Samwadi, the festival

Book presented to Mr Amit Shah, Home Minister, India

The book at World Book Fair

The Digital Ecosystem

"Baaten Kitaben" (Talking about books) on YouTube: 207,000+ views, 2,397 new subscribers in 2025.

Jagranhindi.in serves as the central hub for Hindi literary culture.

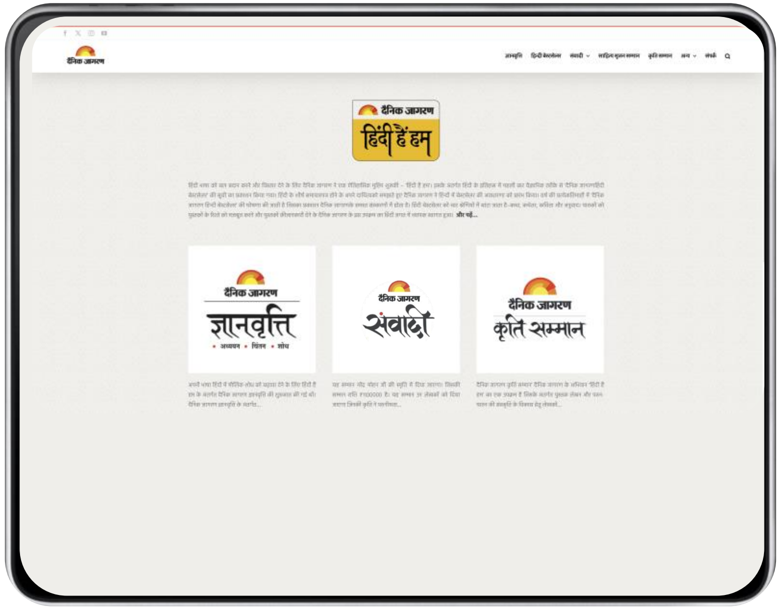

Digital content platforms

The Digital Ecosystem

1000+ videos on our YouTube channel

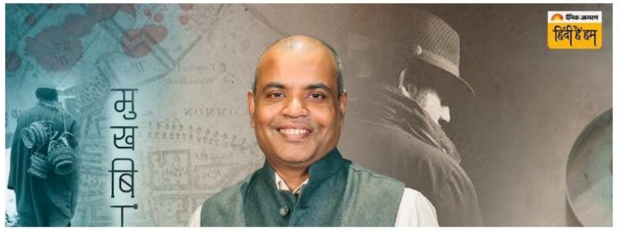

The Transformation

Post-launch, Hindi book sales tripled on volume sales and quadrupled on value terms

Book sales by value have quadrupled

Current Index
443.5

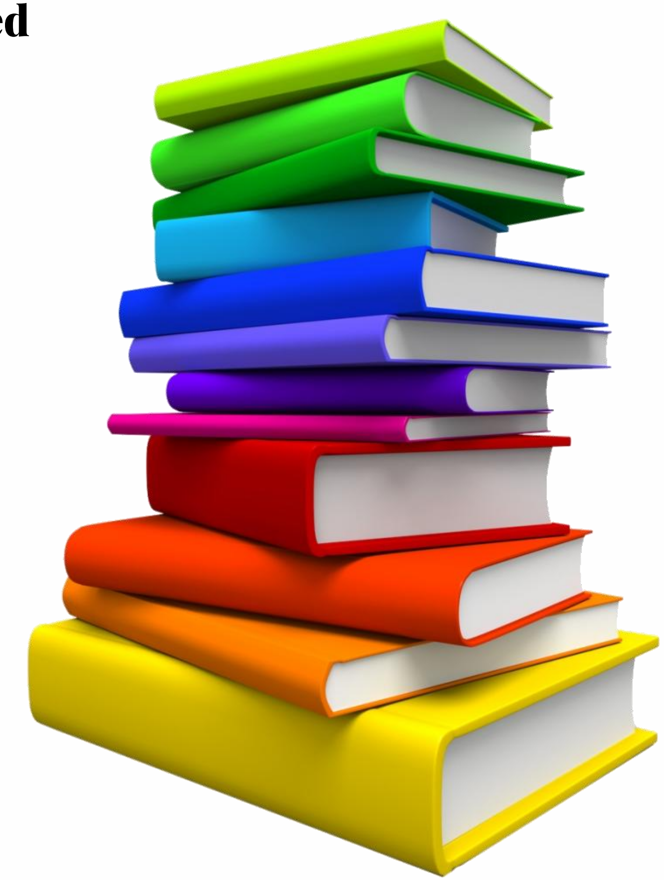

Base Index
100

2016 — **Hindi Book sales Index by Value** — **2025**

Source: Nielsen

The Transformation

Authors introduce themselves as "Jagran Bestseller authors."

The Transformation

Books carry the "Dainik Jagran Bestseller" mark

Dainik Jagran Bestseller mark

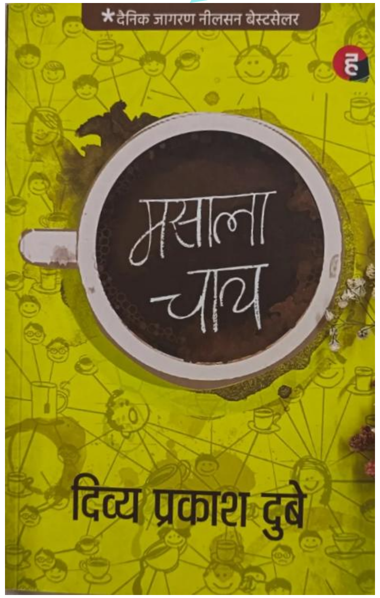

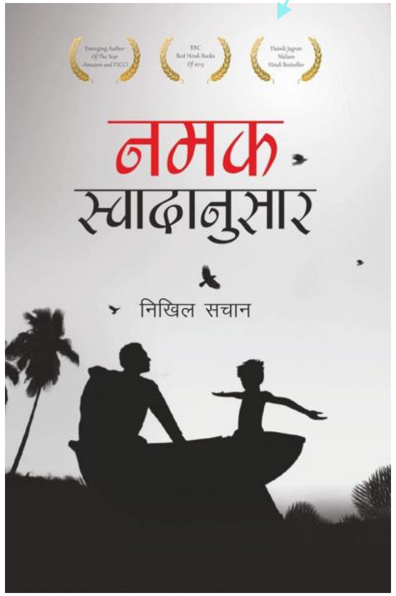

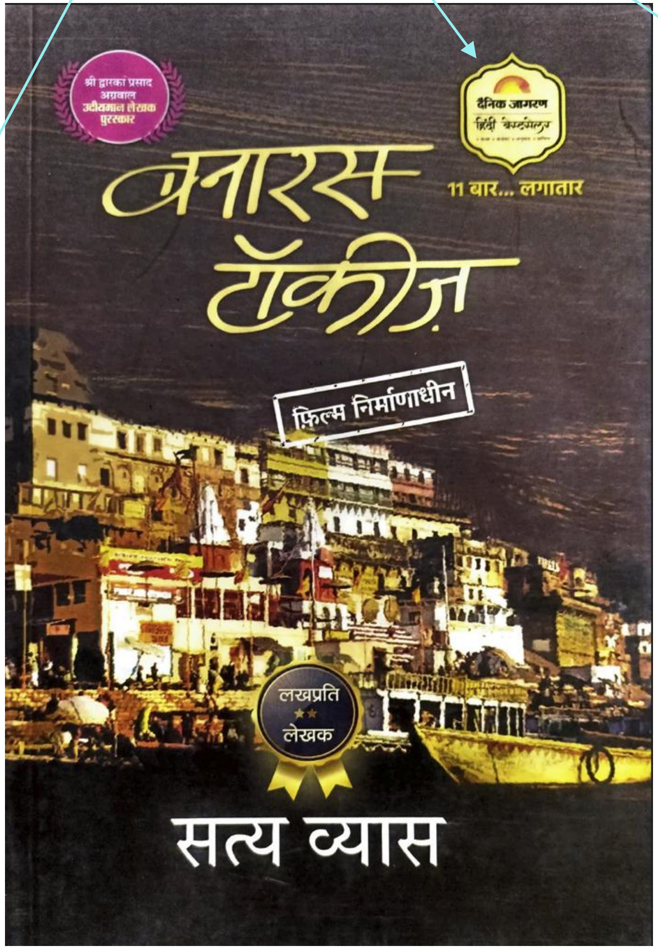

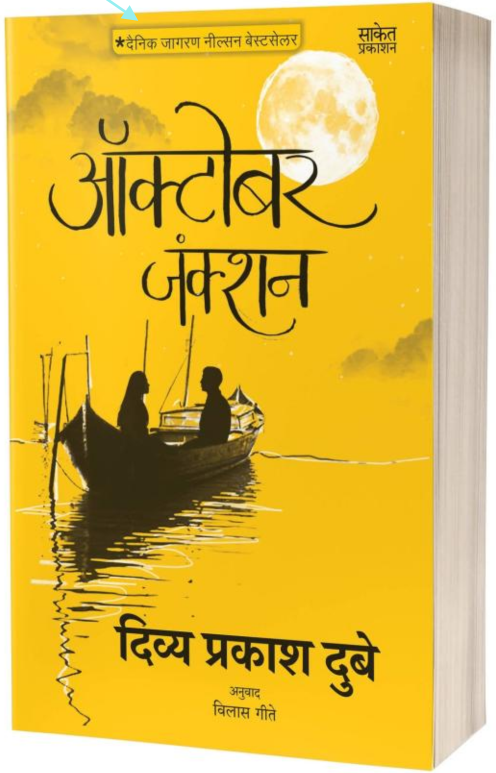

The Transformation

Production houses scout our lists.

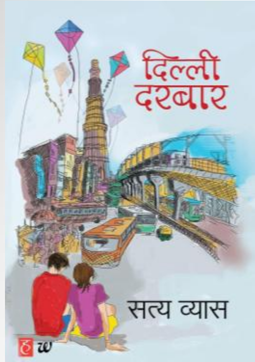

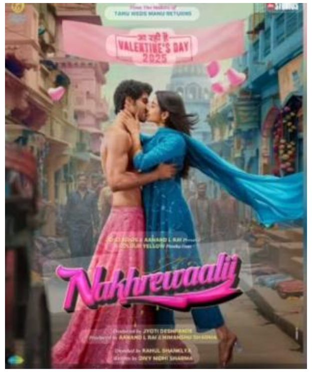

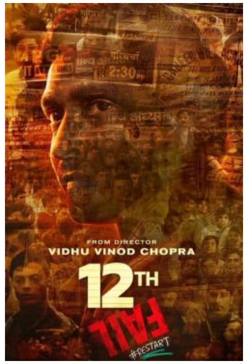

Best selling books → Adapted for Web Series/Films

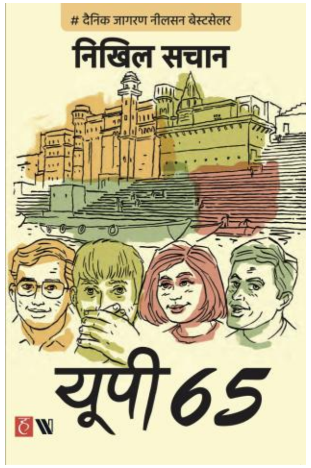

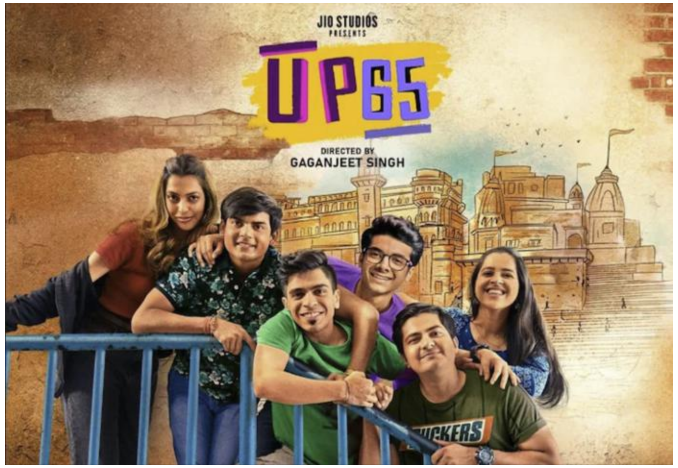

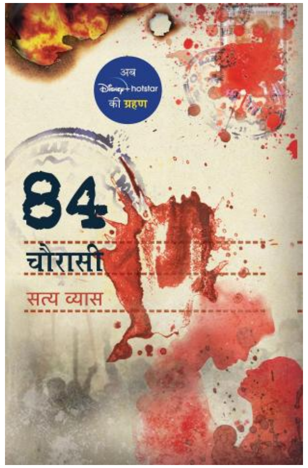

We engineered the operating system that makes Hindi easier to read, easier to choose, and impossible to ignore

A language needs infrastructure to thrive.

Hindi didn't have it. We built it. That's the work.

And in the process, we engineered Hindi readership as a year-round, scalable public habit.

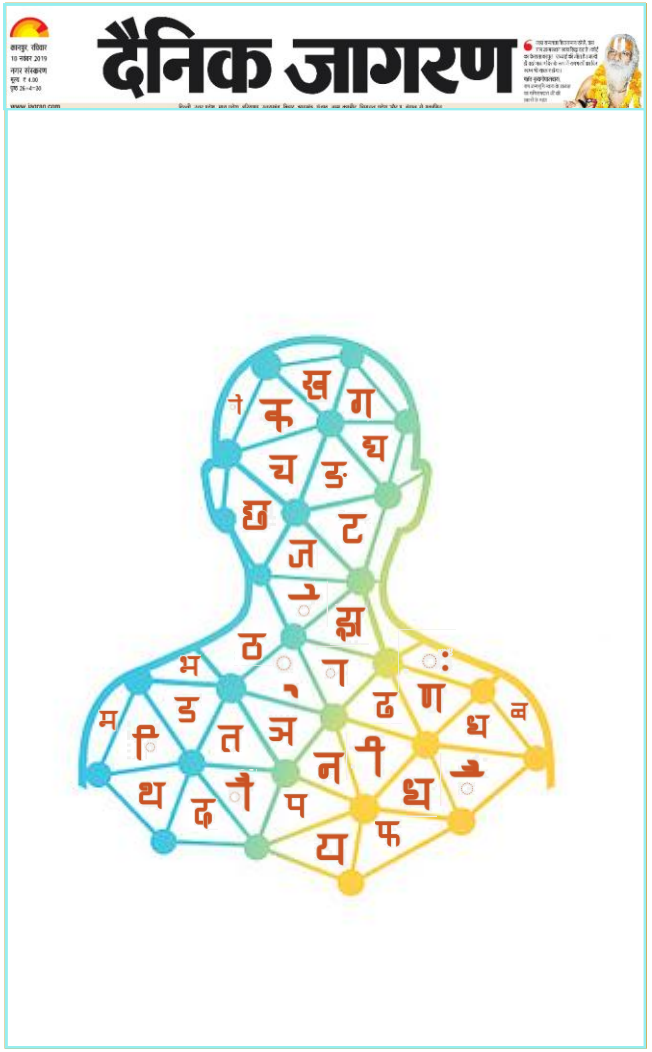

Dainik Jagran

The Hindi Operating System